समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

जून २००५ • वर्ष ५५ • अंक ६ • एक प्रति १० रुपए • वार्षिक १०० रुपए

लन्दन में सम्मेलन से सम्बन्धित
राजस्थानी फाउण्डेशन
की विधिवत् स्थापना

बाईं ओर से डा. के.के. सरावगी, श्री अशोक संचेती, सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री संजय अग्रवाल

बाईं ओर से मित्तल ग्रुप के आर्थिक डायरेक्टर श्री बी.सी. अग्रवाल, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया एवं डा. खेमका

कमलेश्वर द्वारा समाज पर आक्षेप का कड़ा प्रतिवाद (भीतर देखें)

Raymond Park Avenue parx ColorPlus MANZONI

Bhulabhai Desai Road • V. N. Road

इस अंक में

अनुक्रमणिका ३

जनवाणी ४-५

पारिवारिक सामाजिक समारोहों में सादगी बरतें - एक अपील ५

...देश के लिए आपके पास दस मिनट है? / राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम ६

अध्यक्ष की कलम से / श्री मोहनलाल तुलस्यान ७

मारवाड़ी महिलाओं ने बाजी मारी / श्री सीताराम शर्मा ८

अनोखी परम्पराएं / श्री भानीराम सुरेका ९

क्या आप सहमत हैं? होना चाहिए? / श्री हरिप्रसाद विजरायका १०

सुसंस्कारों द्वारा स्वस्थ समाज का निर्माण संभव / श्री रमेश कुमार बंग ११-१२

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामूहिक विवाह की उपादेयता / श्री किशनगोपाल अट्टल १२

सामाजिक संगठनों के प्रति बढ़ती उदासीनता / श्री जयप्रकाश लड्डा १३

कविता : राजस्थान की झांकी / डॉ. मनोहर लाल गोयल १४

राजस्थान को गरबीलो गढ़ - 'चित्तौड़' / श्री सुरजन सिंह शेखावत १५

महिला - एक विचारणीय प्रश्न / श्रीमती पुष्पा चोपड़ा १६

परिवार में गहराती विभाजन दीवार / श्री सत्यनारायण सिंहानिया १६

सोने की चिड़िया / श्री शांति कुमार धनावत १७

कवितायें : नान्हो सो सूरज / श्री नथगिरी भारती १७

फूलों की बरसात / श्री संदीप जैन १७

कवितायें : कारण/मनुहार / श्री ताऊ शेखावाटी १८

ये शहर / श्री जय कुमार रुसवा १८

★ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा लंदन में राजस्थानी फाउंडेशन की स्थापना - एक रिपोर्ट पृष्ठ - १९

युग पथ चरण

❒ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की बैठक का कार्यवृत्त, साहित्यकार कमलेश्वर द्वारा मारवाड़ी समाज पर आक्षेप का सम्मेलन द्वारा कठोर प्रतिवाद सहित पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर, उत्कल, मध्य प्रदेश, बिहार आदि प्रादेशिक सम्मेलनों एवं युवा मंच की महत्वपूर्ण गतिविधियों की जानकारियां। २०-२६

समाज विकास

जून, २००५

वर्ष ५५ ● अंक ६

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३११ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है। - *सम्पादक*

मैं जीवन में प्रथम बार किसी लेख पर प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहा हूं। आपका अप्रैल, २००५ का अंक मिला। भाई मोहनलाल जी तुलस्यान का लेख, अध्यक्ष की कलम से- 'मारवाड़ी वोट बैंक के रूप में संगठित हो' पढ़ा। धर्म, जाति और संप्रदाय के आधार पर वोट देना या मांगना संकीर्णता है, यह उन्होंने माना है। यह उस हद तक लोकतंत्र की विफलता होती है, यह सर्वमान्य है।

जब यह संकीर्णता है, लोकतंत्र की विफलता है तो इसे हम भी अपनाएं, ऐसा विचार हमारे मन में कैसे आ सकता है? समस्याओं के समाधान के अनेक तरीके हैं, संकीर्णता की ओर हमें नहीं सोचना चाहिए। फिर राजस्थान एक राज्य है, जो भी राजनैतिक आवश्यकताएं हो, उस विधान सभा से या वहां के सांसदों द्वारा पूरी करवानी चाहिए। वहां तो सभी मारवाड़ी है, जो चाहे करें।

आप लोगों से अनुरोध है कि लोकतंत्र को जातिवाद से संबंधित करने की प्रेरणा समाज को नहीं दें। मैंने यह पत्र अपने तक ही सीमित रखा है।

- नन्दलाल शाह, कलकत्ता

सम्पादकीय

मारवाड़ी शब्द संकीर्णता के परे है। इसमें राजपूत, वैश्य, ब्राह्मण, जाट, माली, मीणा आदि वृहत मारवाड़ी के सभी व्यक्ति शामिल है। सन् १९५० में कलकत्ता में चार मारवाड़ी विधानसभा सदस्य थे जिनमें एक कानून मंत्री भी थे। उप-राष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत अपने को मारवाड़ी कहते हैं। मारवाड़ी शब्द साम्प्रदायिक या संकीर्ण नहीं है, बल्कि देश के कोने-कोने में बसे हुए स्थानीय व्यक्तियों के अंश है। अतः हमें राजनीति में भाग लेने के आह्वान को संकीर्णता नहीं समझना चाहिए।

'समाज विकास' अपने शीर्षक को सार्थक कर रहा है। मई २००५ का अंक मिला, पढ़ा। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह पत्र साहित्य जगत में भी एक अनूठा कार्य कर रहा है। समाज और साहित्य का यह सुखद समन्वय मूल्यवान है, प्रशंसनीय है और उत्साहवर्द्धक है। बधाई।

- डॉ. उदयवीर शर्मा
सम्पादक, वरदा, बिसाऊ, राजस्थान

समाज विकास नियमित मिल रही है। बड़े चाव से पढ़ता हूं। अच्छे-अच्छे लेख रहते हैं।

- घनश्यामदास गुप्त, भोपाल

अप्रैल अंक में श्रद्धेय नन्दकिशोर जी जालान के लेख 'क्रान्तदर्शी मारवाड़ी युवक- २०वीं व २१वीं शताब्दी के तराजू के पलड़े पर किधर' बड़ा ही विचारक एवं मर्मस्पर्शी है। हमारे मारवाड़ी समाज का पूर्व इतिहास एवं आज का विश्लेषण बड़ा ही हृदयस्पर्शी है। 'एक नया विश्वास' एवं 'काम की पूजा' कविताओं से नयी पीढ़ी के नवयुवकों को एक प्रेरणादायक मार्गदर्शन प्राप्त होगा। ऐसे जोशीले लेखों एवं कविताओं से समाज को सही दिशा प्राप्त होगी। समाज विकास की उपलब्धियां अनगिनत है। भविष्य में ही हमारी अपेक्षा है कि इसके द्वारा समाज को समय-समय पर उत्साहजनक लेख प्राप्त होते रहेंगे।

- सत्यनारायण तुलस्यान,
मुजफ्फरपुर

श्री नन्दकिशोर जी जालान ने अभी तक जिस अदम्य शक्ति से समाज सेवा अक्षुण्ण रखी है बहुत ही सराहनीय है और अनुकरणीय भी। आपके सम्पादकत्व में 'समाज विकास' की काया पलट प्रशंसनीयता का दावा रखती है।

मैंने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की छोटी-छोटी कविताओं का राजस्थानी अनुवाद किया है। इन कविताओं में से कुछ आपने 'समाज विकास' में प्रकाशित भी की थी। राजस्थानी भाषा में रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता संकलन का प्रकाश शायद ही पहले हुआ हो।

श्री सीताराम जी शर्मा, रानीगंज मां बीच बीच मां पधारो होया तो मालूम हुवै पण दरसन रा भाग हालतांई हुया कोयनी।

आप राजस्थानी भासारे वास्ते लड़ाई कर रैयाहो बी खातर थानै बधाई म्हे रवीन्द्र नाथ ठाकुररी ३१५ कवितावां रो राजस्थानी अनुवाद करयो हूं अर बा पोथी छपी जयी है। एक कापी आपरे बिचारां रेखातर भेज रयो हूं।

गणेश राठी, रानीगंज

श्री सीताराम जी शर्मा सपरिवार सानन्द होंगे। आपको पहले भी अपनी कुछ पुस्तकें भेजी है, अब नए पुस्तक भेज रहा हूं। इसका दूसरा भाग भी तैयार है उसकी एक सूची संलग्न है। अभिमत दें। राजस्थान की प्रवासी विभिन्न क्षेत्रों की विभूतियों की जीवनगाथाओं को कई भागों में प्रकाशित करने का उपक्रम है। वैसे यह कार्य सम्मेलन जैसी संस्था को करना चाहिए था। इसे समर्पण धाम पूरा कर रहा है।

रतनलाल जोशी, थाणे,
(महाराष्ट्र)

आपके कर कमलों द्वारा एवं मां सरस्वती व लक्ष्मी गणेश जी की प्रेरणा से सम्पादित समाज विकास मई २००५ पत्रिका एक समाज की प्रेरणा श्रोत एवं जीवन को जीने की कला सिखाती है जिसके द्वारा ही उन्नति के शिखर पर पूरे भारतवर्ष व विश्व में चढ़ा जा सकता है। अतः आप समाज के नव निर्माता हैं। हमारे अखिल भारतवर्षीय अध्यक्ष श्रीमान मोहनलाल तुलस्यान ने अपनी रचना समाज में सम्यक शिक्षा पर जोर दिया जाए में शिक्षा पर काफी जोर डाला है। तुलसी के दोहे द्वारा लायकत्व शब्द जो पैसे की

बजाय योग्यता पर केन्द्रित हो रहा है। फिर उन्होंने विधिवत विवाह पद्धति को अपनाने पर जोर दिया है। सचमुच में यह विचार समाज के उत्थान में सहायक सिद्ध होगा। मेरी राय में अगर शिक्षा के साथ चिकित्सा एवं वर्तमान समय के अनुसार राजनीति को भी अपनी पत्रिका में यथोचित स्थान देकर ही प्रगति के मार्ग को प्रशस्थ बनाना सम्भव हो सके।

बड़ी ही खुशी की बात है कि 'समाज विकास' मार्च २००५ अंक में प्रकाशित श्री सीताराम शर्मा की समीक्षा एवं लिखित 'रोना मना है' अत्यंत ही भव्य अंश है। ''नाट अलाउड टु क्राई, द बिड़ला बैटल वीथ कैंसर'' बिड़ला परिवार से प्राप्त सारांश बड़े ही महत्वपूर्ण है।

सचमुच आपके द्वारा यह समाज के लिए प्रेरणा दायक एवं महत्वपूर्ण नया रास्ता प्रदान कर समाज के सभी लोगों को खुशहाल, प्रतिष्ठावान, सुशिक्षित व धनवान बनाने में सहायक सिद्ध होगा। सचमुच में आप महान है।

मई ०५ अंक में आपके द्वारा लिखित 'मारवाड़ी समाज के राजनीति में बढ़ते कदम' पढ़कर महसूस हुआ कि शिक्षा, चिकित्सा के साथ राजनीति भी आवश्यक हो गया है। वर्तमान आर्थिक युग में राजनीति में अपना एक स्थान सुनिश्चित करना चाहता है। यह प्रमाणित कर दिया है कोलकाता पौरसभा चुनाव द्वारा। सचमुच आपके द्वारा यह संदेश राज्य एवं राष्ट्र के स्तर पर इसकी काफी चर्चाएं बढ़ेगी ताकि समाज के लोग आगे सभी क्षेत्रों में आयें।

श्री शर्माजी ने बताया कि चुनाव जीतना हारना बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात है राजनीति में चुनाव के माध्यम से अपनी भूमिका प्रत्यक्ष करना।

– प्रहलाद राय शर्मा
(सुलतानियां), पटना

समाज विकास मई ०५ अंक पढ़ा। सामाजिक उत्थान व अन्य विषयक लेख प्रशंसात्मक लगे। विशेष कर सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका द्वारा लिखित लेख पाश्चात्य सभ्यता पर गहरी एवं सटिक चोट है। वही हमारी अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की विलुप्तता पर चिन्ता जताई गई है। लेखक को बधाई।

– मुरारी केडिया, कोलकाता

पारिवारिक, सामाजिक समारोहों में सादगी बरतें

– मोहनलाल तुलस्यान

मारवाड़ी समाज में सम्प्रति धन का प्रदर्शन, दिखावा, आडम्बर व फिजूलखर्ची जोर पकड़ता जा रहा है। पहले विवाह समारोहों तक यह सब सीमित था पर अब देखा जा रहा है कि जन्मोत्सव, जन्मदिन शादी की वर्षगांठ आदि पर भी लोग बेहिसाब खर्च करने लगे हैं। घर की बजाय होटलों, क्लबों में ये समारोह आयोजित किए जाते हैं एवं इसे अपनी हैसियत बताने का माध्यम बनाया जा रहा है। जो जितना ज्यादा खर्च करता है वह समाज में उतना ही श्रेष्ठ होने का भ्रम पालता है। यहां तक कि शादी-विवाह के मौके पर अब कई-कई पार्टियां आयोजित कर नई-नई प्रथाएं शुरू की जा रही हैं।

मारवाड़ी समाज के लिए समग्रता में यह स्थिति बहुत विडम्बनापूर्ण है, क्योंकि यह समाज सिर्फ पैसे वालों का ही नहीं, बल्कि अन्य समाजों की तरह इस समाज में भी बहुत बड़ा हिस्सा नौकरी पेशा करने वालों मजदूरों और साधारण लोगों का है जिनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है।

इसलिए समाज के बंधुओं से मेरी पुरजोर अपील है कि वे धन का अपव्यय न कर अपने समाज के हित में धन का सदुपयोग करें। दिखावा, आडम्बर से बचकर सादगी से पारिवारिक, सामाजिक समारोह आयोजित करें ताकि अन्य समाजों की नजर में मारवाड़ी समाज की प्रतिष्ठा स्थापित हो।●

क्या अपने देश के लिए आपके पास दस मिनट है?

राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

यदि हां ! तो इसे पढ़िए, वरना मर्जी आपकी। इसके बाद वह देश के लोगों की सोच बताते हुए कहते हैं- आप कहते हैं हमारी सरकार निकम्मी है। आप कहते हैं- हमारे कानून पुराने पड़ गए। आप कहते हैं- नगरपालिका कचरा नहीं उठाती। आप कहते हैं- फोन काम नहीं करता, रेलवे मजाक बन गई है। एयरलाइन्स दुनिया में हमारी ही सबसे खराब है। चिट्ठी अपनी मंजिल तक नहीं पहुंचती। आप कहते हैं, कहते रहते हैं और कहते ही रहते हैं। आपने इस बारे में क्या किया। फिर राष्ट्रपति ने कहा कि मान लीजिए एक व्यक्ति सिंगापुर जा रहा है। इसे अपना नाम दीजिए, उसे अपनी शक्ल भी दे दीजिए। आप दुनिया के सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डे पर उतरते हैं। सिंगापुर में आप अपनी सिगरेट का टुकड़ा सड़कों पर नहीं फेंकते और स्टोर में खाते भी नहीं हैं। आपको उनके भूमिगत संपर्कों पर रश्क महसूस होता है। आप शाम पांच से आठ बजे के बीच आर्चर्ड रोड पर कार चलाने का तकरीबन साठ रुपए भुगतान करते हैं। अगर पार्किंग में आपने निर्धारित समय से ज्यादा गाड़ी खड़ी की तो टिकट पंच कराते हैं। लेकिन आप सिंगापुर में कहते कुछ नहीं। कहते हैं क्या? दुबई में आप रमजान के दिनों में सार्वजनिक रूप से कुछ भी खाने का साहस नहीं करते। वाशिंगटन में आप ५५ मील प्रति घंटा से ऊपर गाड़ी चलाने की हिमाकत नहीं करते और पलट कर सिपाही से यह भी नहीं कहते कि जानता है मैं कौन हूं। मैं फलां हूं फलां मेरा बाप है। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के समुद्र तटों पर आप खाली नारियल हवा में नहीं उछालते। टोकियो में आप सड़कों पर पान की पीक क्यों नहीं थूकते। बोस्टन में आप जाली योग्यता प्रमाण पत्र क्यों नहीं खरीदते। डा. कलाम बीच में याद दिलाते है- मैं आप ही के बारे में बात कर रहा हूं, सिर्फ आपके। डा. कलाम कहते हैं- 'आप दूसरे देशों की व्यवस्था का आदर और पालन कर सकते हैं, लेकिन अपनी व्यवस्था का नहीं। भारतीय धरती पर कदम रखते ही आप सिगरेट का टुकड़ा जहां-तहां फेंकते हैं, कागज के पुर्जे उछालते हैं। यदि आप पराए देश में प्रशंसनीय नागरिक हो सकते हैं तो यहां भारत में आप ऐसा क्यों नहीं बन सकते। डा. कलाम ने मुम्बई महानगर पालिका आयुक्त श्री तिनायकर के हवाले से कहा कि अमीर लोग अपने कुत्तों को सड़कों पर घुमाने निकलते हैं और जहां-तहां गंदगी बिखेर कर आ जाते हैं। और फिर वही लोग सड़कों पर गंदगी के लिए प्रशासन पर दोष मढ़ते हैं। क्या वे उम्मीद करते है कि वे जब भी बाहर निकलेंगे तो एक अधिकारी झाड़ू लेकर उनके पीछे-पीछे चलेगा और जब उनके कुत्ते को हाजत लगेगी तो वह एक कटोरा उसके पीछे लगाएगा। राष्ट्रपति ने मिसाल दी कि अमरीका और जापान में कुत्ते के मालिक को उसकी छोड़ी हुई गंदगी साफ करनी पड़ती है। फिर शासन व्यवस्था के बारे में डा. कलाम ने कहा कि हम सरकार चुनने के लिए वोट डालने जाते हैं और अपनी सारी जिम्मेदारियां भी वहीं उलट आते हैं। हम सोचते हैं कि हमारा हर काम सरकार करेगी और हम फर्श पर पड़ा हुआ जरूरी कागज उठाकर उसे कूड़ेदान में डालने की जहमत तक नहीं उठायेंगे। रेलवे हमारे लिए साफ सुथरे बाथरूम देगी और हम उन्हें ठीक से इस्तेमाल करना भी नहीं सीखेंगे। डा. कलाम ने कहा कि समाज की ज्वलंत समस्याओं पर भी हमारा ऐसा ही रवैया है। हम ड्राइंग रूम में बैठकर दहेज के खिलाफ गला फाड़ते हैं और अपने घर में इसका उल्टा करते हैं और बहाना देखिए पूरी व्यवस्था ही खराब है। अगर मैं अपने बेटे की शादी में दहेज नहीं लूंगा तो इससे कौन सा फर्क पड़ जाएगा। राष्ट्रपति ने पूछा कि इस व्यवस्था को बदलेगा कौन? यह व्यवस्था किसकी है किसकी? आप आसानी से कह देंगे व्यवस्था में शामिल हैं हमारे पड़ोसी, आसपास के घर, अन्य शहर, अन्य समुदाय और सरकार। लेकिन मैं और आप कतई नहीं। जब कुछ अच्छा करने की हमारी बारी आती है तो हम अपने परिवार को सुरक्षित कवच में घेर लेते हैं दूसरे देशों की ओर निहारते हैं और इंतजार करते हैं कि कोई मिस्टर क्लीन आयेगा अपने जादुई हाथों से चमत्कार करेगा और ऐसा नहीं होता तो देश छोड़कर ही चल देंगे। उन्होंने कहा- '*हम अपने भय से भागकर अमेरिका जायेंगे, उनके गौरव का गुणगान करेंगे, व्यवस्था की प्रशंसा करेंगे और जब न्यूयार्क असुरक्षित हो जायेगा तो आप इंग्लैंड भाग जाएंगे। इंग्लैंड में बेरोजगारी होगी तो खाड़ी चले जाएंगे और खाड़ी में युद्ध छिड़ जाएगा तो आप मांग करेंगे कि भारत सरकार हमें बचाकर ले जाए। हर कोई देश को गाली देने को तैयार है पर व्यवस्था में सकारात्मक योगदान के बारे में नहीं सोचता*'। **क्या हमने अपनी आत्मा को पैसे के हाथों गिरवी रख दिया है।** डा. कलाम व्यवस्था में नागरिकों के सकारात्मक योगदान के लिए देशवासियों को झकझोर देते हैं।

श्रेष्ठ नागरिक बनने की शुरूआत करते हुए इस संदेश से अगर आप वाकई सहमत हैं तो :-

उपरोक्त संदेश को अपने सदस्यों, स्कूलों, कॉलेजों एवं साथियों में प्रचार-प्रसार करना चाहिए।●

अध्यक्ष की कलम से

फर्ज की लड़ाई में दुश्मनों का होना ही लाजिमी है

मोहनलाल तुलस्यान

चार्ल्स मैके की एक अर्थपूर्ण कविता की पंक्तियां है-

तुम कहते हो तुम्हारा कोई दुश्मन नहीं
अफसोस मेरे दोस्त, इस शेखी में दम नहीं,
जो शामिल होता है फर्ज की लड़ाई में,
जिसे बहादुर लड़ते ही हैं
उसके दुश्मन होते ही हैं।
अगर नहीं है तुम्हारे
तो वह काम ही तुच्छ है जो तुमने किया है।
तुमने किसी गद्दार के कूल्हे पर वार नहीं किया है,
तुमने झूठी कसमें खाने वाले होंठ से प्याला नहीं छीना है,
तुमने कभी किसी गलती को ठीक नहीं किया है,
तुम कायर ही बने रहे लड़ाई में।।

सामाजिक क्षेत्र से जुड़े हम सभी लोगों के लिए यह कविता महत्वपूर्ण है इसलिए कि हम सामाजिक फर्ज की लड़ाई में शामिल हैं। सामाजिक फर्ज से आशय यह है कि समाज में रहते हुए समाज में व्याप्त कुरीतियों, कुसंस्कारों, कुप्रथाओं के विरुद्ध आन्दोलन की कमान थामना।

समाज के सभी सदस्यों की मनोवृत्ति एक सी नहीं होती। प्रत्येक समाज सोच, कार्य और अर्थ की दृष्टि से कई श्रेणी में बंटा होता है। अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, आस्तिक-नास्तिक, पुरातन-आधुनिक जैसी श्रेणियों में बंटे समाज को एक सूत्र में पिरोये रखना और विकृतियों को समाप्त करने की पहल करना ही सामाजिक नेतृत्व का प्रमुख काम होता है। और यह काम जटिल तथा जोखिम भरा होता है।

सामाजिक क्षेत्र से जुड़े होने के कारण हमें पता है कि समाज की प्रासंगिकता तभी है जब पुरानी परम्पराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाजों में से सारतत्व को निकालकर नवीन परम्पराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाजों का विकास किया जाए क्योंकि जड़ता समाज को पंगु बना देती है, धीरे-धीरे समाज को पतनोन्मुख कर देती है।

मारवाड़ी समाज जो कि भारत के प्रमुख समाजों में अग्रणी समाज है, के सदस्य होने के नाते जब हम इस समाज की परम्पराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाजों का अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि समय के साथ बदलाव की प्रक्रिया में यह समाज काफी पिछड़ा हुआ है। यही नहीं इस समाज के एक वर्ग ने प्रतिरोध, प्रतिकार न होने की स्थिति में कुछ ऐसे नियमों को लागू कर दिया है जो समाज की छवि को दूषित, कलुषित, धूमिल कर रहा है। एक समय इन्हीं नियमों, रीतियों के विरुद्ध अनवरत आन्दोलन करके समाज की एक प्रगतिशील, स्वच्छ छवि का निर्माण हुआ था। बीसवीं शताब्दी के चौथे, पांचवें, छठे दशक में समाज के नेतृत्व में समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों, कुसंस्कारों के विरुद्ध जमीनी लड़ाई लड़ी थी। उन्हें कदम-कदम पर प्रताड़ित होना पड़ा, मार खाने की नौबत आई पर वे अपने निश्चय पर डटे रहे और अन्तत: समाज को उनकी बात माननी पड़ी थी।

गौर से देखें तो समाज का एक छोटा सा तबका जिसके पास प्रचुर धन है, समाज में नई-नई कुरीतियों को जन्म दे रहा है। चाहे वह वैवाहिक समारोहों में दिखावा, प्रदर्शन, आडम्बर हो या निजी समारोहों में। देखा जा रहा है कि विवाह-वर्षगांठ, बच्चों के जन्मदिन की पार्टी भी घर की बजाय होटलों में आयोजित होने लगे हैं जिन पर लाखों रुपये पानी की तरह बहाकर अपनी हैसियत का प्रदर्शन किया जा रहा है। सामाजिक कल्याण के कार्यों के लिए पैसा देने में लोग आनाकानी करते हैं पर ऐसे समारोहों के लिए उनके पास पैसा होता है।

एक गंभीर मसला यह भी है कि समाज के अधिकांश लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ नहीं रह गई है। बैंकों, वित्तीय संस्थानों व स्वजनों से उधार लेकर व्यापार में पैसा लगाया जा रहा है। ऐसे में इस प्रकार का धन का अपव्यय क्या शोभनीय है?

हमारी लड़ाई ऐसे ही लोगों से है जो सिर्फ अपनी बात सोच रहे हैं। समाज की छवि की जिन्हें रत्तीभर भी चिन्ता नहीं है और इस लड़ाई में अपमानित होना, प्रताड़ित होना यहां तक कि मार खाना भी पड़ सकता है। पर इससे घबड़ाना उचित नहीं है। क्योंकि कुव्यवस्था को बदलने की कोशिश में यह सब जायज है। याद करें मारवाड़ी बालिका विद्यालय के संस्थापकों की पिटाई हुई थी तो क्या वे अपने उद्देश्य से हट गए थे? ऐसेही कितने सामाजिक संस्थान हैं जो विरोध के बावजूद अस्तित्व में आए और आज वे हमारी धरोहर हैं।

याद रखें फर्ज की लड़ाई में दुश्मनों का होना लाजिमी है पर लड़ाई से मुंह मोड़ लेने से स्थिति बदलती नहीं अपितु कायरता का ठप्पा लग जाता है। क्या हम और आप कायर कहलाना पसंद करेंगे या फर्ज की लड़ाई में शहीद होना? फैसला कर लें।●

मारवाड़ी महिलाओं ने बाजी मारी

सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

समाज विकास के गत अंक में मैंने मारवाड़ी समाज के राजनीति में बढ़ते कदम की चर्चा की थी। मारवाड़ी समाज के सर्वांगीण स्वरूप में आ रहे विराट परिवर्तन के मद्देनजर यह चर्चा आवश्यक है, समय की मांग है। किसी काल में मारवाड़ी समाज जो मात्र व्यापार की कला में निपुण थे, जिनका चिन्तन-मनन कारोबार के द्वारा धनोपार्जन करने एवं समाज सेवा करने तक ही सीमित था, राजनीति जिनके लिए परहेज का विषय था, दूर-दूर तक जिनके साथ कहीं कोई सामंजस्य नहीं था, उसी समाज के राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ते कदम बड़े ही फख्र का विषय है। उससे भी अधिक फख्र का विषय है पुरुष वर्ग के साथ-साथ समाज की महिलाओं का राजनीति के क्षेत्र में पदार्पण करना। कितना क्रांतिकारी परिवर्तन! कभी किसी काल में समाज की स्त्रियों को घूंघट से बाहर निकलने की सख्त मनाही थी। तब तत्कालीन समाज को कूपमण्डुकता से बाहर निकालने, स्त्रियों की वैचारिक ऊर्जा का सदुपयोग हो इसके लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने कई आन्दोलन छेड़े, सदस्यों ने लाठियां झेली, गालियां खाई पर अपना लक्ष्य नहीं भूले। उसी का सुपरिणाम है आज का यह क्रान्तिकारी परिवर्तन। आशानुरूप समाज की महिलाओं ने अपनी मेधा, अपनी क्षमता से सबको चकित कर दिया।

सुनिता झंवर

मीना पुरोहित

श्वेता इंदोरिया

१९ जून को कोलकाता नगर निगम व नगरपालिका चुनाव में मारवाड़ी समाज की आधी दर्जन स्त्रियां एवं आधे दर्जन से भी अधिक पुरुष वर्गों का प्रत्याशी बनना एवं उनमें से तीन महिलाओं का विजयी होना मारवाड़ी समाज में आयी राजनैतिक जागृति का जीता जागता प्रमाण है। **कोलकाता की पूर्व उप मेयर श्रीमती मीना पुरोहित, सुनिता झंवर, सुश्री श्वेता इंदोरिया विभिन्न राजनीतिक दलों की उम्मीदवारी करते हुए विजयश्री को वरण किए।** चुनावी समर में विजयश्री प्राप्त की या पराजय यह महत्व का विषय नहीं है, महत्व इस बात का है कि समाज में राजनैतिक चेतना का सूत्रपात हुआ और वह स्वयं को राजनीति की मुख्य धारा से जोड़ने में सफल हुआ जिस पर कदम दर कदम बढ़ते हुए कभी न कभी राष्ट्र संचालन की भूमिका भी बखूबी निभा पाने में सक्षम सिद्ध होगा।

कोलकाता नगर निगम चुनाव में जिन्होंने पराजय का सामना किया उनका हौसला बुलन्दी करते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं समाज विकास समाज के विजयी उम्मीदवारों को उनकी सफलता पर हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता है तथा आगामी वर्ष बंगाल में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में समाज के भाई-बहनों की निर्भीक भागीदारी का आह्वान करता है।

अनोखी परंपराएं

भानीराम सुरेका, महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

यह हम सब जानते हैं कि अन्याय करने वाले की अपेक्षा, अन्याय सहने वाला अधिक दोषी होता है। हमें न किसी पर अन्याय करना चाहिए न ही किसी का अन्याय सहना चाहिए। किसी और पर अन्याय होता देख आंखें बंद कर लेना भी गलत होता है। गलत बात हमेशा गलत होती है। चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामाजिक। मुद्दा यह है कि हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में अन्याय होता है और निरंतर होता है, लेकिन उसका प्रतिकार, प्रतिरोध नहीं होता क्योंकि हमारे दिलोदिमाग में ऐसी बहुत सी बातें भरी पड़ी हैं जो अक्सर अन्याय के प्रति हमारी चेतना को जागृत ही नहीं होने देती। परंपरा के नाम पर हो रहा अन्याय इसी तरह का है।

परंपराएं क्या है और उनका पालन कहां तक आवश्यक है यह एक बहस का विषय है। पर यह निश्चित है कि सभी परम्पराएं अव्वल तो प्रासंगिक नहीं होती और जो होती है उनका समय-समय पर परिष्कार करना आवश्यक होता है।

परम्परा के संबंध में एक कहावत प्रचलित है- नई बहू घर में आने को थी। घर भर में चहल-पहल था। जैसे ही बहू के आगमन का समय हुआ सब दरवाजे की ओर भागे। इसी समय एक बिल्ली वहां टहलती दिखाई दी। चूंकि बिल्ली का शुभ मुहूर्त में रहना अपशकुन माना जाता है इसलिए नई बहू की सास ने जल्दी से एक पींजरा (दूध, दही रखनेवाला) लेकर बिल्ली को ढक दिया। नई बहू के आगमन की सभी रस्म पूरी होने पर ही बिल्ली को पींजरे से बाहर निकाला गया। नई बहू को लगा कि यह हमारी परंपरा है इसलिए जब उसकी बहू घर आने को थी तो उसने भी बिल्ली और पींजरे की खोज शुरू कर दी। विवाह के अवसर पर बहुत ऐसी अनोखी अलग-अलग परंपराएं देखने को मिलती हैं। हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में बहुत सी ऐसी घटनाएं घटती हैं जो हमारे लिए शुभ साबित होती हैं। सदा शुभदायक फल पाने की आशा में हम ऐसी घटनाओं को गांठ बांध देते हैं और बार-बार उसकी पुनरावृत्ति करते रहते हैं। यद्यपि यह जरूरी नहीं है कि हर बार एक ही कारक शुभता का प्रतीक हो पर मन के भ्रम को मिटाना मुश्किल होता है। कालांतर में यह परंपरा का रूप धारण कर लेता है।

यूं तो जीवन के हर पहलू में परंपराओं की दुहाई दी जाती है पर कुछ ऐसे अवसर हैं जिनमें परंपराएं अनिवार्यत: पालन करने की मजबूरी होती है। विवाह समारोह इसका सबसे सशक्त उदाहरण है और उनके परम्पराओं का पालन विवाह-सगाई में होता है।

विवाह विशुद्ध रूप से एक पुरुष और एक स्त्री के मिलन का एवं जीवन भर साथ रहकर वंश परम्परा के विकास के साथ-साथ पारिवारिक- सामाजिक आदर्शों, परंपराओं के निर्वहन के लिए संकल्प का अवसर होता है। सादे तौर पर जहां इसे सबके लिए खुशी का क्षण होता होना चाहिए वहीं देखा यह जाता है कि जहां वर पक्ष के लिए यह खुशी का अवसर होता है वहीं कन्या पक्ष के लिए यह प्रहसन का पर्याय होता है। दान-दहेज सहित आडम्बर के इतने बोझ कन्या पक्ष के मत्थे मढ दिये जाते हैं कि अगर कन्या पक्ष आर्थिक रूप से सुदृढ़ न हुआ तो कलंक का टीका लगना अवश्यम्भावी हो जाता है। परंपरा की आड़ में एक दिन के दिखावे के लिए किसी भी कन्या के पिता को जीवन भर के लिए कर्ज में डुबो देना कहां की बुद्धिमानी है यह समझ के परे है। मेरी बहन के विवाह में लड़के वालों ने मुकलावा साथ में यह कहकर लेने से इनकार कर दिया कि विवाह में मुकलावा लेने की परंपरा हमारे यहां नहीं है, वहम है यानि विवाह के बाद मुकलावा लेंगे तो बाद में समान बेसी मिलेगा।

विवाह पहले भी होते थे। उन दिनों पूरा गांव कुटुम्ब की श्रेणी में आता था। विवाह में आज से कहीं अधिक लोग शामिल होते थे पर उनमें आत्मीयता और परस्पर स्नेह का भाव इतना प्रबल होता था कि विवाह समारोह सचमुच एक खुशी का अवसर होता था। तब आज की तरह पति-पत्नी में नोक झोंक, मारपीट, सामाजिक पंचायती पुलिस अदालती कार्यवाई के किस्से देखने-सुनने को नहीं मिलते थे। शिक्षा भले कम रहा हो पर संस्कार के मामले में वे बहुत आगे थे। आज पर्दा-प्रथा की परंपरा नहीं है, अच्छी बात है, लेकिन साड़ी की जगह ड्रेस (पैजामा कुर्ता या पैन्ट, टोप) पहनने की रीवाज के लिए मारवाड़ी परम्परा का हमें सदैव ख्याल रखना चाहिए। साड़ी पहनना मारवाड़ियों की पारम्परिक पहचान है इससे महिलाओं में लक्ष्मी स्वरूपी देवी की झलक आती है।

जो परंपरा खुशी न दे सके उसको ढोते रहने का क्या मतलब है। आज विज्ञान के चरमोत्कर्ष के युग में लाजिमी है कि हम अपनी परंपराओं की यथार्थता पर चिन्तन मनन करें एवं अनावश्यक रीति रिवाजों को खत्म कर स्वस्थ सामाजिक परंपरा की शुरूआत करें। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो एक दिन ऐसा आएगा कि जब नई पीढ़ी समस्त परंपराओं को बेकार का बोझ समझकर कूड़े में फेंक देगी और ऐसी परंपराओं को अपनाएगी जो अधिक संभव है हमारी परम्परागत संस्कृति के संपूर्ण विपरीत हो। अन्तर्जातीय और अन्तर्राष्ट्रीय विवाह के रूप में इसकी शुरूआत हो चुकी है। पिछले दिनों आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के दशम अधिवेशन पर अन्तर्जातीय विवाह के विषय पर वहां की महिलाओं ने एक छत्र रखा था और इस विषय पर काफी बहनों ने अपनी राय पक्ष विपक्ष में रखी थी और एक व्यापक खुलकर सामाजिक चिन्तन हुआ था। यह मारवाड़ी सम्मेलन के लिए एक गौरव की बात है।●

क्या आप सहमत हैं ? होना चाहिये ?

✍ **हरि प्रसाद विजरायका,** भू.पू. संयुक्त महामंत्री, बिहार प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी सम्मेलन क्यों ?

कई बन्धुओं के मन में प्राय: यह प्रश्न उठता है कि आज समय समग्र राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने की जरूरत है तब अपने आपको मारवाड़ी, बिहारी, बंगाली जैसे प्रान्तीयता बोधक शब्दों से जुड़े रखने का क्या औचित्य है ? खास तौर से हमारे लिए प्रश्न खड़ा किया जाता है कि बिहार, बंगाल, असम आदि में सदियों से रहते हुए भी मारवाडी या मारवाड़ी के मंच से काम करने की क्या आवश्यकता है ? अनेकों बार इस प्रश्न का उत्तर दिया जा चुका है, लेकिन अपने ही भाइयों, खासतौर पर सम्मेलन से जुड़ने वाले नवयुवकों का मत इस सम्बन्ध में स्पष्ट होना आवश्यक है। सम्मेलन का उद्देश्य है, मानव कल्याण हेतु समाज का सर्वांगीण विकास। मैं समझता हूं कि जहां मानव मात्र की भलाई का महान उद्देश्य लेकर हम चल रहे हैं व उसके लिए सम्मेलन के माध्यम से समाज को संगठित व विकसित कर रहे हैं तो भला इसमें किसी को भी क्या आपत्ति होगी।

सत्य यह है कि हम सब भारतीय हैं, भारत हम सबका देश है, हम जहां भी रहेंगे, भारतीय ही कहलायेंगे, लेकिन जब कोई व्यक्ति या समुदाय एक स्थान से दूसरे स्थान में जाता है तो पहचान के लोग प्राय: उसको उस स्थान विशेष का नाम दे दिया करते हैं। इसलिए पश्चिमी क्षेत्र मारवाड़ अर्थात् राजस्थान, हरियाणा, मालवा आदि के पूर्व से आए लोग मारवाड़ी कहाने लगे और आज भी कहे जाते हैं। यों आज मारवाड़ी शब्द का केवल भौगोलिक महत्व नहीं रह गया है, अपितु यह एक संस्कृति का प्रतीक बन गया है। इसीलिए हम चाहे बिहार में हों या बंगाल में हों, असम में हों या आंध्र में, मारवाड़ी होकर भी उस प्रदेश के हैं। बिहार में रहते हैं इसलिए पहले बिहारी हैं, फिर मारवाड़ी। क्योंकि मारवाड़ी शब्द हमारी संस्कृति का पर्याय है और हम यह छिपाना नहीं चाहते हैं कि हमें इस संस्कृति से प्यार है। हमारी हर धारणा, हर सोच, हर धड़कन में रम रही है यह मारवाड़ी संस्कृति और तब तक रमती रहेगी हमारे खून की हर बूंद में यह संस्कृति जब तक हम इसकी विशेषताओं से सराबोर रहेंगे।

क्या है मारवाड़ी संस्कृति ?

कोई पूछे कि क्या है यह मारवाड़ी संस्कृति। कठिन सवाल तो नहीं है, सीधा सा उत्तर है- जो शाकाहार में विश्वास रखे व सुरापान को बुरा माने वही मारवाड़ी ! जो व्यापार में यथासंभव ईमानदारी बरते, जो दूसरों की रकम लेकर हड़प न जाए, जो नेकनीयता व भलमनसाहत से व्यापार करे, जो धोखाधड़ी न करे, जो सात्विक विचारों का पालन करे, जो अपनी कमाई से केवल अपना पेट न पाले अपितु औरों को खिलाकर खाये वह मारवाड़ी। समय पड़ने पर जिस दानवीर ने सम्पूर्ण सम्पत्ति राष्ट्र के लिए न्योछावर कर दी, ऐसे भामाशाह की सन्तान कहाने व उसके आदर्शों का पालन करने में गौरव का अनुभव कर रहे हैं मारवाड़ी। जो वीर शिरोमणि बापा रावल की तरह, स्वतंत्रता सेनानी महाराणा प्रताप की तरह घास की रोटी खाकर भी सांसारिक सुखों का लात मारकर परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ डाले, ऐसे कठोर त्यागी-तपस्वी का जीवन जिसका आदर्श है, उसका नाम है मारवाड़ी। जो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का पांचवां पुत्र कहलाने का गौरव प्राप्त कर सके, जो डॉ. राममनोहर लोहिया के रूप में अन्याय के विरुद्ध अकेला बिगुल बजा सके, वह है मारवाड़ी। जो विश्व के कोने-कोने में जाकर देश में कश्मीर से कन्याकुमारी एवं अटक से कटक तक चारों ओर फैलकर, छोटे से देहात से बड़े शहर तक जाकर चौबीसों घंटे मेहनत कर अपने अध्यवसाय एवं परिश्रम के बलबूते से अपना स्थान बना ले, वह है मारवाड़ी। जो भारत के कोने-कोने में धर्मशालाएं, कुएं बावड़ी, अस्पताल, शिक्षालय, सार्वजनिक स्थान, वाचनालय, मंदिर, महात्माओं के घर बनावे, वह है मारवाड़ी। जहां बलदेव दास रामेश्वर लाल दूधवेवाला जैसे आदर्शवान व्यापारी हुए, जहां रामदेवजी चौखानी, ईश्वरदास जी जालान, भैरवमलजी सिंघी जैसे समाज सुधारक हुए हैं, जो रामनाथ बाजोरिया जैसे समाज सेवी, भाई हनुमान प्रसाद जी पोद्दार जैसे धार्मिक महापुरुष दे सके, जहां अर्जुन बाबू व गंगा बाबू जैसे व्यक्तित्व हों, जो अनेकों असमर्थों में अशिक्षा का अन्धकार दूर कर प्रकाश पुञ्ज बिखेर सके, गौरीशंकर डालमिया के रूप में ऐसा व्यक्तित्व जो अपंग, अपाहिज, कुल से उत्पीड़ित अनेकानेक रोगों से ग्रसित मानव भेष में जी रहे किन्तु कष्टों से ओतप्रोत कीड़े-मकोड़े से बदतर जीवन यापन करने वाले को इन्सानियत से जीने का हक मुहैया करा सके, वह है मारवाड़ी। जो राजस्थान से डोरी-लोटा मात्र लेकर, दर-दर जंगल-जंगल भटक कर, जहां जो बस गया वहां का होकर रह गया, वहीं रहकर अपने को हर विद्या में अग्रणी बना ले, वह है मारवाड़ी। जो आई.ए.एस. बनकर सरकारी पदाधिकारी होकर भ्रष्टाचार से दूर निष्पक्ष रह सके, वह है मारवाड़ी। जो उन्नति करने पर भी विनम्र बना रहे, जो सम्पन्न होकर विपन्न को न बिसराये, क्या ऐसे मारवाड़ी को कोई बिहारी कहाये जाने में आपत्ति करेगा, क्या कोई बंगाली ऐसे मारवाड़ी को बंगाली कहाये जाने में आपत्ति करेगा। हम समझते हैं कि जो ईर्ष्या से आक्रान्त नहीं है, जो प्रान्तीयता की संकीर्ण भावना से ग्रस्त नहीं है, जो राष्ट्र को टुकड़े-टुकड़े में विघटित करने के षड्यंत्रकारी हथकंडों में साझेदार नहीं है, वह कदापि मारवाड़ी को अपने से अलग बताने की बात तो दूर, मारवाड़ी को अपने भाई से कम मानने की कल्पना भी नहीं कर सकता। डॉ. विश्वनाथ बजाज जैसे कितने लोग होंगे देश में क्या इस प्रान्त का कोई भी व्यक्ति इस कर्त्तव्यपरायण एवं निर्भीक प्राचार्य के आगे अपने को छोटा अनुभव न करेगा।

अब एक बात पर हमें विचार करना है कि हम वास्तव में कितने मारवाड़ी हैं। क्या हम मारवाड़ी होने में गौरव का अनुभव कर सकते हैं, क्या हम मारवाड़ी की इस परिभाषा में आते हैं जो ऊपर कही गई है। शायद 'हां' में उत्तर देने में हमलोग कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं। इसका कारण यह है कि मारवाड़ी के रूप में जो हमारी पहचान है, वे लोग उपरोक्त जिन विशेषताओं की हमसे अपेक्षा करते हैं, वह हमसे लोप होती जा रही है। आज अपने ही समाज की बात नहीं, सारे देश की यही स्थिति है। कहा जाय, सम्पूर्ण मानवता के मूल्यों का ह्रास हुआ है। विज्ञान की उन्नति व विचारों की प्रगतिशीलता ने हमें भौतिक दृष्टि से जितना उन्नत बनाया है, नैतिक दृष्टि से हम गिरे हैं। भला मारवाड़ी समाज इससे अछूता कैसे रह सकता है। हम भी धीरे-धीरे अधोपतन की ओर अभिमुख होने जा रहे हैं। हमें मारवाड़ी सम्मेलन के माध्यम से अपने को गिरती हुई स्थिति से बचाना है। यह कैसे हो सकता है, इस पर चर्चा करना जरूरी है।

सर्वप्रथम यह मानस बनाना होगा कि सम्मेलन को महत्व देना आवश्यक है व समाज के लोगों की सुरक्षा बहुत कुछ सम्मेलन की मजबूती से जुड़ी हुई है, इस तथ्य को स्वीकारना होगा।●

सुसंस्कारों द्वारा ही स्वस्थ समाज का निर्माण संभव

रमेश कुमार बंग
अध्यक्ष, आंध्र प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

यह ध्रुव सत्य है कि देश, काल और परिस्थितियां सतत् सामाजिक जीवन और व्यवहारों को आवश्यक रूप से प्रभावित करती हैं, दूसरे शब्दों में कहें तो परिवर्तन की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। १९वीं और २०वीं शताब्दी को महापरिवर्तन का काल कहें तो असंगत नहीं होगा। लगभग २०० वर्षों की इस समयावधि में विश्व के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक ढांचे में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है और भारतवर्ष भी इन परिवर्तनों के प्रभाव से अछूता नहीं रहा। परिवर्तनों की सुदीर्घ श्रृंखला ने हमारे समाज को भी प्रभावित किया। जिस प्रकार समुद्र मंथन से अमृत और विष दोनों की उत्पत्ति हुई उसी प्रकार इस महापरिवर्तन काल में अच्छाई और बुराई दोनों का ही जन्म हुआ। एक ओर जहां आधुनिक युग ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भौतिक समृद्धि, प्रजातान्त्रिक सरकारों, व्यक्तिगत स्वतंत्रता आर्थिक और सामाजिक समानता, राष्ट्रीय सांस्कृतिक भावना सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन की उदात्त भावना जैसी अच्छाइयों को जन्म दिया वहीं शैक्षिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक पतन जैसी सम्पूर्ण रूप से विनाशकारी बुराइयां भी स्पष्ट दृष्टिगोचर हुई। यद्यपि अपनी कमजोरियों के कारण भारतीय समाज ने लगभग हजार वर्ष तक गुलामी का दंश झेला तथापि भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्य सुरक्षित रहे, किन्तु २०० वर्षों के अंग्रेजी शासन ने भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की चूलें तक हिला दी है। आज की भीड़ भरी दुनियां में, भौतिकता की आंधी में, साम्प्रदायिक संकीर्णता की बाढ़ में, प्रतिस्पर्द्धा की दौड़ में, स्वार्थपरता के तूफान में हमारे सभी नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक मूल्य अबाध गति से बहते चले जा रहे हैं। इस अधोपतन का सबसे मूल कारण हमारी शिक्षा व्यवस्था का राष्ट्रीय चरित्र और संस्कृति के अनुकूल न होना है।

हमें अपनी कला, संस्कृति एवं दर्शन आदि की गौरवशाली परम्परा पर सदैव गर्व रहा है परंतु, आज अनास्था एवं पारस्परिक अविश्वास के वातावरण में हमारी प्राचीन परम्परा के मूल्य धूमिल हो गए हैं। आधुनिकता की भ्रामक अवधारणा, अस्तित्ववादी जीवन, अनात्मपरक नास्तिकता, पश्चिमी भोगवादी संस्कृति और स्वच्छन्द जीवन शैली का तीव्र विष हमारे सामाजिक जीवन को विषाक्त करता जा रहा है। तर्क प्रधान चिन्तन आदि के कारण अतीत में अविश्वास एवं स्व में अनास्था आदि कारणों से हमारे प्राचीन मूल्य प्रदूषित होते जा रहे हैं। स्वयं पर अनास्था का ही दुष्परिणाम है आत्मनाश। अर्थात् अपने आदर्शों एवं मूल्यों, अपनी सांस्कृतिक विरासत, अपनी चिन्तन प्रणाली का परित्याग कर उसके स्थान पर बाहरी या विदेशी चिन्तनप्रणाली को प्रतिष्ठित करना। इसके फलस्वरूप हमारी सामाजिक व्यवस्था के मूल आधार संयुक्त परिवार विघटित हो रहे हैं। दाम्पत्य जीवन की मजबूत डोर कच्चे धागे के रूप में परिवर्तित हो गई है और दिन-प्रतिदिन वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेद घटनाएं बड़ी तेजी से बढ़ रही है। दूरदर्शन तो अपसंस्कृति का मानो प्रचारक बन गया है। विभिन्न चैनल, कामुकता, हिंसा, वासना, नग्नता और कुसंस्कारों को आधुनिकता के नाम पर परोसने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहे हैं। विवाहेत्तर एवं विवाह पूर्व सम्बन्धों का अनैतिक प्रचलन बढ़ता जा रहा है। भ्रूण परीक्षण और हत्या की पैशाचिक प्रवृत्ति बढ़ रही है। दान, दया, धर्म, परोपकार आदि आत्म प्रसिद्धि के साधन बन गए हैं। आडम्बर और वैभव प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है। हमारे आचार-विचार, खान-पान, वेशभूषा, भाषा कुछ भी हमारा नहीं रहा, सभी कुछ पश्चिमी हो गया है। संक्षेप में कहा जाए तो सम्पूर्ण सामाजिक ढांचा कुसंस्कारों और कुप्रवृत्तियों से जर्जर होता जा रहा है।

हजारों वर्ष पूर्व श्रीमद् भागवत में की गई भविष्यवाणी आज अक्षरशः सत्य प्रमाणित हो रही है। श्रीमद् भागवत पुराण में लिखा है-

हे राजन! कलिकाल के प्रभाव से ज्यों ज्यों कलियुग आता जायेगा, त्यों-त्यों उत्तरोत्तर धर्म, सत्य, सोंच, क्षमा, दया, आयु, बल और स्मृति नष्ट होती जायेंगी।

कलिकाल में जिसके पास धन होगा, उसी के लोग कुलीन, सदाचारी, सद्गुणी और विद्वान मानेंगे। जिसके हाथ में शक्ति होगी वही धर्म और न्याय की व्यवस्था अपने अनुकूल करा सकेगा।

दाम्पत्य सम्बन्ध में केवल अभिरूचि हेतु होगी और व्यवहार में माया। स्त्री के शील और पुरुष के चरित्र का

महत्व केवल रति कौशल में होगा।

वस्त्र, कमण्डल, दन्ड आदि से ब्रह्मचारी, सन्यासी आदि आश्रमियों की पहचान होगी। एक दूसरे का चिह्न स्वीकार कर लेने से ही आश्रम परिवर्तन समझा जायेगा। पाण्डित्य केवल वचन की पहचान होगी और जिसके पास दम्भ अधिक होगी, वह साधु माना जायेगा। विवाह में एक दूसरे की स्वीकृति ही पर्याप्त होगी, किसी धार्मिक संस्कार की आवश्यकता नहीं होगी। केवल प्रसाधन स्नान होगा, पानी की आवश्यकता नहीं होगी। दूर घूमना ही तीर्थ होगा, निकट के तीर्थ की अवहेलना होगी। केशधारण करना सुन्दरता समझी जायेगी। अपने पेट का पालन करना ही पुरुषार्थ समझा जायेगा और धृष्टता से बात करना सत्य।

यदि हमें उक्त बुराइयों से बचकर स्वस्थ समाज का निर्माण करना है तो स्वयं ही आदर्श परिवार बनाने की दिशा में प्रयत्न करने होंगे। हमें परिवार में परस्पर प्रेम, सहयोग, सौहार्द्र, निर्भरता, मर्यादा और अनुशासन का वातावरण बनाना होगा। परिवार का का वातावरण, खान-पान और वेषभूषा सात्विक और शालीन रखनी होगी। मांगलिक कार्यक्रम और आयोजन में आत्म संयम रखते हुए अपव्यय को रोकना होगा। ऐसे चैनल जो मन-मस्तिष्क में अवांछनीय विचारों को जन्म देते है, उनको देखने से बचना होगा। परिवार में समय-समय पर धर्म एवं आध्यात्म की चर्चाएं आयोजित करनी होगी और उनमें बच्चों को भी सम्मिलित करना होगा, बड़ों का आचरण एवं व्यवहार बच्चों के लिए प्रेरणादायक रखना होगा। बच्चों को सामाजिक धर्म और कर्त्तव्य की जानकारी परिवार द्वारा देनी होगी। यदि प्रत्येक परिवार ऐसा करेगा तभी सुसंस्कृत और स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकेगा। सामाजिक संगठन को भी इस दिशा में जागरूकता लाने के प्रयास करने होंगे।●

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामूहिक विवाह की उपादेयता

✍ किशनगोपाल अट्टल

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जन्म, विवाह एवं मरण जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएं हैं। व्यक्ति परिवार की इकाई है तथा कई परिवार मिलकर समाज की संरचना करते हैं। व्यक्ति के जीवन में ऐसे कई अवसर आते हैं जिनमें समाज की भागीदारी आवश्यक होती है। सामाजिक सहभागिता से किसी कार्य विशेष में सहयोग, स्नेह एवं दिशा तो मिलती ही है साथ ही जिस व्यक्ति के घर कार्य होता है, वह तनाव मुक्त रहता है, विकेन्द्रीकृत व्यवस्था से प्रबंधन सुदृढ़ होता है तथा कार्य की गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है।

आज का युग भौतिकतावादी है। जीविकोपार्जन एवं बढ़ते खर्च की स्पर्धा में व्यक्ति पैतृक गांव से पलायन कर रहे हैं। सामाजिक रीति रिवाजों में खर्च दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। ऐसे में हमारा समाज भी विवाह जैसे पावन संस्कार में झूठी स्पर्धा में हैसियत से ज्यादा ही खर्च करता है। व्यक्ति जीवन भर की गाढ़ी कमाई यह सोचकर खर्च कर देता है कि लोग क्या कहेंगे? प्रेमचन्द ने अपने एक लेख में लिखा है कि बाराती को सम्पूर्ण सृष्टि में कोई संतुष्ट नहीं कर सका है। व्यवस्था संबंधी कमियां निकालने पर कोई तुल जाये तो कई कमियां निकाली जा सकती है। जीवन भर के लिए रिश्ते में बंधते हैं, उसमें पारस्परिक सद्भाव, समरसता एवं हर्ष के भाव रहने चाहिए। ऐसे में वे रह नहीं पाते तथा अवांछित तनावपूर्ण वातावरण सृजित हो जाता है जो कालान्तर में अनुकूलन के अभाव में कभी कभार विघटन को जन्म देता है।

वर्तमान युग में समय का सर्वत्र अभाव है। पुराने समय में विवाह अथवा अन्य मांगलिक पर्वों पर दूर-दूर के रिश्तेदार भी समय पूर्व आते थे तथा परिजनों का सामर्थ्य से ज्यादा व्यवस्था व अन्य कार्यों में सहयोग करते थे। आधुनिक परिपेक्ष्य में जब किसी व्यक्ति को एक ही दिन में एक से अधिक स्थानों पर कई विवाह समारोह में भाग लेना होता है तो वह सिर्फ उपस्थिति ही दे पाता है, सहयोग की क्या अपेक्षा की जा सकती है? जैसे कि एक सम्पन्न परिवार की शादी में देखा गया कि लड़की के बाप ने अपनी हैसियत से भी ज्यादा खर्च शादी में किया। विवाह के समस्त कार्यक्रमों में सुव्यवस्था की कमी वर पक्ष को महसूस हुई। पहले तो बारात देरी से पहुंची, भोजन परोसने में कार्यकर्त्ताओं की कमी महसूस हुई हालांकि वधू पक्ष ने काफी आदमी लगा रखे थे लेकिन उनसे काम लेने वालों की कमी की वजह से समस्त कार्यक्रमों में ठीक से व्यवस्था हो नहीं पाई। बाराती अच्छे थे इसलिए मन ही मन कोसते रहे। ऐसा नहीं था कि साधन सुविधाओं की कमी थी, लेकिन व्यवस्था का अभाव था, जिसके अनेक कारण हो सकते हैं। पैसा खर्च होने पर भी संतोषप्रद प्रबंधन न होने से स्वाभाविक दुःख होता ही है तथा ये कटु यादें बरबस रह-रह कर मन को कचोटती हैं। ऐसा कई स्थितियों में होता है। उल्लेखित दृष्टव्य उदाहरण मात्र हैं। विवाह में व्यवस्था के अभाव में खर्च दुगुना-तिगुना भी होता है फिर भी कमियां रह ही जाती है।

ऐसे में सामूहिक विवाह समाज में अपनी अहम भूमिका रखते हैं जब व्यवस्था सार्वजनिक होती है, समाज के सहयोग से होती है तब प्रबंधन गुणवत्तायुक्त होता है। ऐसे में पारस्परिक सहयोग, सद्भाव होता है। जिम्मेदारियों का विकेन्द्रीकरण होने से हर्षोल्लास से स्वजनों के साथ परिणयोत्सव सानन्द सम्पन्न होता है।

वैसे तो सामूहिक विवाह कई समाजों में हाल ही में सम्पन्न हुए हैं। हैदराबाद-सिकन्दराबाद में मारवाड़ी समाज में इसके प्रति रूचि नहीं होने के कई कारण है। सामूहिक विवाह के फायदों को समाज के बंधुओं तक विस्तृत रूप से पहुंचाने में किसी ने भी अपना ध्यान नहीं दिया, इसके पूर्व जहां भी यह परिणय पर्व आयोजित किये गए उनके सुखद परिणामों की जानकारी यहां के समाज को बराबर नहीं मिली। सामूहिक विवाह की इस रस्म में समय, श्रम और धन की बचत तो होती ही है, दूसरी ओर अवांछित स्पर्धा से हटकर गरीब-अमीर एक ही मंच पर एकत्र होते हैं, जिससे आदर्श का अभ्युदय होता है। आज के वर्तमान समय की मांग को देखते हुए सामूहिक विवाह निसंदेह अनिवार्य है। समाज के हर परिवार का दायित्व है कि इसके प्रति चिन्तनशील और जागरूक रहकर सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए इस नवीन प्रयोग को व्यावहारिक परम्परा के रूप में विकसित करने के लिए प्रयास करें।●

सामाजिक संगठनों के प्रति बढ़ती उदासीनता – कारण और निवारण

✍ जयप्रकाश लड्ढा

अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध सन् १८५७ में हुए गदर की असफलता ने भारतीय जनमानस पर व्यापक प्रभाव डाला। देश में राष्ट्रीयता की भावना हिलोरें मारने लगी और अंग्रेजों की कुटिलता धीरे-धीरे भारतीय समाज के सामने उजागर होने लगी। १९वीं शताब्दी के समाज और धर्म सुधार आन्दोलनों ने सोने पर सुहागा का कार्य किया। स्वामी विवेकानन्द, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं अनेक महान संतों ने हिन्दू धर्म, आध्यात्म, चिन्तन और सत्य सनातन समाज व्यवस्था का वास्तविक ज्ञान कराया और धर्म तथा समाज में आ गई विकृतियों को दूर करने का आह्वान किया, फलस्वरूप देश में विभिन्न जातीय और सामाजिक संगठन अस्तित्व में आये। यह सामाजिक संगठन एक ओर जहां धर्म और सामाजिक सुधारों के अग्रदूत बने वहीं दूसरी ओर स्वतंत्रता संग्राम को गति देने और एकीकृत भारत वर्ष की स्थापना का आधार बने।

सामाजिक संगठनों का जिन मनीषियों ने नेतृत्व किया वे महान राष्ट्र भक्त तथा सामाजिक और धार्मिक सुधारों के अग्रदूत थे। वे जानते थे कि सामाजिक कुरीतियों का निवारण किए बिना और शिक्षा का प्रसार किए बिना संगठित होकर आजादी की लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। विभिन्न जातीय और उपजातियों के संगठनों ने एक मंच पर समाज को संगठित कर सुधारों को गति दी और देश को स्वतंत्र कराने में अपना योगदान दिया। विभिन्न संगठनों के यत्र-तत्र उपलब्ध दस्तावेज इस सत्य के प्रमाण हैं।

जैसे-जैसे स्वतंत्र भारत अपनी मंजिल की ओर बढ़ता रहा नए-नए संगठन अस्तित्व में आने लगे।

विशेषतया मारवाड़ी समाज के संगठनों ने स्वयं को मात्र सामाजिक एवं सांस्कृतिक सुधारों तक ही सीमित नहीं रखा वरन् जनकल्याणकारी कार्यक्रमों को संस्थागत रूप प्रदान कर जन सामान्य की सेवा का बीड़ा उठाया। आज मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित विभिन्न सेवा उपक्रम बिना किसी भेदभाव के जरूरतमंदों की सहायता कर रहे हैं। देश भर में मारवाड़ी समाज को जो आदर और सम्मान प्राप्त हुआ है, उसका मुख्य कारण संस्थागत सेवा उपक्रम ही हैं। किन्तु विगत कुछ समय से मारवाड़ी समाज में सामाजिक संगठनों के प्रति उदासीनता दिखाई देने लगी है जो कि एक चिन्ता का विषय है, क्योंकि सामाजिक एकता ही इन संगठनों का मूल उद्देश्य है। यदि सामाजिक एकता कमजोर होती है तो शेष प्रयास और उपलब्धियां गौण माने जाएंगे।

सामाजिक संगठनों के प्रति बढ़ती उदासीनता के कारणों को खोज कर उनका निराकरण नितान्त आवश्यक है, अन्यथा सामाजिक एकता तो छिन्न-भिन्न होगी ही, इसके साथ ही अनेक अन्य समस्यायें भी हमारे सम्मुख उठ खड़ी होंगी। सामाजिक संगठनों से समाज का मोह भंग होने का मूल कारण वर्चस्ववादी मानसिकता है। संगठन में कुछ कार्यकर्ता अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता है। संगठन को अपनी इच्छानुसार चलाने का प्रयास करते हैं, फलस्वरूप निष्ठावान और समर्पित कार्यकर्ताओं का संगठन से पलायन प्रारम्भ हो जाता है और संगठन पंगु हो जाता है। जिस संगठन में कार्यकर्त्ता परस्पर एक दूसरे को नीचा दिखाने में उलझे रहते हैं, उस संगठन का जनाधार समाप्त हो जाना स्वाभाविक है।

सामाजिक संगठनों से समाज की उदासीनता का दूसरा कारण संगठनों का अपने मूल उद्देश्य से भटक जाना है। लगभग सभी सामाजिक संगठनों के मूल उद्देश्य सामाजिक एकता, जनकल्याण, शिक्षा प्रसार, सामूहिक प्रयासों द्वारा सामूहिक विकास एवं सामाजिक कुरीतियों का निवारण कर स्वस्थ एवं सुसंस्कृत समाज की स्थापना करना होते हैं। जब संगठन और इनके अधिपति इनकी उपेक्षा कर आत्म प्रचार और आत्म प्रतिष्ठा को ही अपना लक्ष्य बना लेते हैं तो इनके प्रति समाज में वितृष्णा का भाव उत्पन्न होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

संगठनों के प्रति उदासीनता का तीसरा प्रमुख कारण है योग्य और समर्पित कार्यकर्त्ताओं का अभाव। जिस प्रकार रेलगाड़ी की सुरक्षित यात्रा का मूल आधार उसका चालक होता है, उसी प्रकार किसी भी सामाजिक संगठन की सुदृढ़ता और विस्तार उसके नेतृत्व पर निर्भर करता है। सुयोग्य नेतृत्व उसे ही माना जा सकता है जो प्रेरणाओं की दृष्टि से सबसे अधिक सहायता करें। प्रेरणाओं में सबसे अधिक सहायता वही नेतृत्व कर सकता है जो प्रेरणा उत्पन्न करने वाली अनुभूतियों से स्वयं प्रेरित होता है, सामाजिक परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार मूल्यों, परम्पराओं, आदर्शों एवं मान्यताओं में परिवर्तन कर सकने में सक्षम हो, अन्यथा हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और वाली स्थिति उत्पन्न हो जाती है और समाज संगठन में अपना विश्वास खो देता है।

सामाजिक संगठनों के प्रति समाज में उदासीनता का चौथा मुख्य कारण संगठन में पद को प्रतिष्ठा का प्रतीक मान लेने की प्रवृत्ति है। एक समय था जब संगठन में पद प्राप्ति का अर्थ दायित्व निर्वहन की तत्परता माना जाता था किन्तु आज पद प्राप्ति का अर्थ मात्र प्रतिष्ठा रह गया है। ऐसे में निष्काम समर्पित कार्यकर्त्ताओं का संगठन से विमुख हो जाना स्वाभाविक है। इनके अतिरिक्त स्वच्छन्द पाश्चात्य जीवन शैली, विघटित होते संयुक्त परिवार, सामाजिक समस्याओं के निराकरण में संगठनों का असफल रहना, संगठनों के नेतृत्व की कथनी और करनी में अन्तर होना आदि कारण भी कुछ हद तक संगठन के प्रति उदासीनता के लिए उत्तरदायी है।

संगठनों को यदि सामान्य जनमानस में पुन: विश्वास उत्पन्न करना है तो संगठनों को समाजोन्मुखी कार्यक्रम तय कर उनके क्रियान्वयन को प्राथमिकता देनी चाहिए। वर्चस्ववादी मानसिकता पर अंकुश लगाते हुए संगठन को सर्वाधिक महत्व देना होगा, निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं को संगठन में पर्याप्त महत्व देना होगा, संगठन में पद का आधार योग्यता को बनाना होगा और संगठन में पद को प्रतिष्ठा का प्रतीक मान लेने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना होगा। संक्षेप में कहा जाय तो सामाजिक संगठनों में नेतृत्व को अपने कार्य-व्यवहार में आमूल चूल परिवर्तन करते हुए दूरगामी योजनाएं बनानी चाहिए और उनका मुख्य उद्देश्य सामाजिक संगठन पर केन्द्रित होना चाहिए। संगठनों को ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने पर बल देना चाहिए जिनसे बालक, युवा, महिलाएं, प्रौढ़ एवं बुजुर्ग सभी संगठन से स्वाभाविक रूप से जुड़ें। नेतृत्व इस प्रकार का होना चाहिए, जिसका अनुसरण करने में समाज को गौरव की अनुभूति हो।●

राजस्थान की झांकी

■ डॉ. मनोहरलाल गोयल, जमशेदपुर

आओ रानी मरुधरा की,
तुमको सैर कराएं।
वीर प्रसूता, गौरवशाली,
राजस्थान दिखाएं।
यहीं हुए हैं राणा सांगा,
जन्मे यहीं प्रताप।
'हल्दी घाटी' में चेतक की
गूंजी थी पदचाप।
जोहर की ज्वाला में धधकी
यहीं पदमिणी रानी।
राठौड़ी दुर्गा की धरती,
है जानी पहचानी।
जयमल, फत्ता, गोरा, बादल
का इतिहास बताएं।
आओ भैया मरुधरा की
तुमको सैर कराएं।
पन्ना धाय कटाया निज सुत
स्वामी पुत्र बचाया।
हाड़ी रानी ने सिर देकर,
धरती धर्म निभाया।
यह धोरां धरती हैं, इसकी
साक्षी है सैनाणी।
इसी धरा ने हमें दिया है,
'भामा' जैसा दानी।
मीरा बाई के भजनों से
तन-मन पुन: जगाएं।
आओ दादी मरुधरा की
तुमको सैर कराएं।

मीरा की भाषा पर सबकी
टिकी हुई अभिलाषा।
मीठी, मधुर, सभी रस रंजित
राजस्थानी भाषा।
महल, अटारी किले अनोखे,
अद्‌भुत है संसार।
रंग-रंगीले, भांत-भतीले
पर्व और त्यौहार।
राजस्थानी संस्कृति के बहु
रंग तुम्हें दिखलाएं।
आओ बहना, मरुधरा की
तुमको सैर कराएं।

राजपुताना रहा कभी, अब
राजस्थान बना है।
लोकगीत, संगीत नृत्य का
अद्‌भुत यहां समा है।
पुरुषों के सिर पर केसरिया,
साफा, पाग सुहाती।
लहंगा चोली पहन नारियां
फागणिया लहराती।
रखड़ी, बंगड़ी, बाजुबंद के
दर्शन तुम्हें कराएं।
आओ मित्रों, साथ चलो हम
राजस्थान दिखाएं।

नगर गुलाबी जयपुर इसकी
रंगीनी है न्यारी।
चौपड़ जैसी सड़क यहां की,
ऊंटों की असवारी।
चांदपोत हनुमान यहीं है-
गोविंदजी के दर्शन।
गलताजी का अलग नजारा
अपना ही आकर्षण।
राम निवास बाग में कुदरत
से तुमको मिलवाएं।
आओ बच्चों, मरुधरा की
तुमको सैर कराएं।

हवा महल का देख नजारा
परदेशी चकराए।
सिल्ला देवी के दर्शन की
आगत आश लगाए।
नक्काशी, मीनाकारी की
चीजें सबको भाती।
मनभावन जयपुर नगरी की
हरदम याद दिलाती।
महलों, दुर्गों और किलों की
नगरी तुम्हें दिखाएं।
आओ रानी मरुधरा की
सबको सैर कराएं।

अरावली की ऊंची चोटी
गुरु शिखर कहलाती।
आबूजी पर गर्मी में भी,
ठंडक रंग दिखाती।
दिलवाड़ा के जैनी मन्दिर
जैसे अभी बने हैं।
दूर-दूर से दर्शक आते
श्रद्धाभाव सने हैं।
नौकानयन करें निक्की में
ऐसा अवसर पाएं।
आओ-भैया मरुधरा की
तुमको सैर कराएं।
उदयापुर झीलों की नगरी
शोभा इसकी न्यारी।
जैसे काश्मीर से उतरी
कोई राजकुमारी।
वैभवशाली नगर रहे हैं,
जोधपुरा बीकाणा।
रामदेवजी, गूगाजी, पाबू
का यहां ठिकाना।
राजस्थानी गौरव गाता,
गढ़ चित्तौड़ दिखाएं।
आओ बहना मरुधरा की
तुमको सैर कराएं।

श्रीनाथ जी के दर्शन हित
नाथ दुवारा जाएं।
झुंझनू, खाटू, सालासर
जाकर धोक लगाएं।
आल भीलवाड़ा नगरी ने
ख्याति विश्व में पाई।
मकराना के संगमरमर ने
घर-घर धूम मचाई।
देवालय हर ढाणी-ढाणी,
सोये देव जगाएं।
आओ मित्रों मरुधरा की
तुमको सैर कराएं।

कोटा, बूंदी, डीग, भरतपुर
इनका रंग निराला।
नागौरी बैलों की जोड़ी,
बुला रही दे झाला।
कैर, सांगरी, फोग, बोरिया
का यह देश दिवाना।
दाल-चूरमा, बाटी, गट्टा
जहां मिलेगा खाना।
छाछ, राबड़ी लूण्याघी से
तन-मन स्वस्थ बनाएं।
आओ मरवण, मरूधरा की
तुमको सैर कराएं।

स्वाभिमान का, आन बान का
लिखा गया सोपान।
साहस, शौर्य, त्याग हिम्मत की
धरती राजस्थान।
वीरभूमि है धर्म भूमि यह
यहां कला भंडार।
चित्रकला, संगीत कला का
बेमिशाल आगार।
अमरकला शेखावाटी की
भित्ती चित्र दिखाएं
आओ भैया मरुधरा की
तुमको सैर कराएं।

राजस्थान को गरबीलो गढ़- 'चित्तौड़'

सुरजनसिंह शेखावत

जुध भागां धामै जिको, गढ़ तजियां नहिं गत्त।
गढ़ नै म्हे बांध्यो गळै, आवो सौ असपत्त।।

(रण खेत सूं भागणियां नै गढ़ में सरणों मिल सकै है- पण गढ़ छूट्या कठै जावण नै जगां है। गढ़ मैं म्है गळा के बांध राख्यो है- चाहै सो बादस्या चढ़ आवो- गळो कट्यां गढ़ टूटैला।)

जौंहर अर साकां का गौरव सूं मंडित वीर बेटां अर बीर बेटियां की जणेता राजस्थान की आ धरती, आपका बांका गढ़ां के लिए भी बखाण जोग है। अबीढ़ा डूंगरां की चोट्यां पर बण्या औंर बाळू का टीबां सूं घिर्‍या मरुथळां कै बीच खड्या वै गरीबीला गढ़ राजस्थान का नर-नाहरां अर वीर नारियां का रजपूती सूं भरेड़ा बेजोड़ कारनामां का जीता-जागता, मुंह बोलता इतिहास है। बड़ा-बड़ा सामराज्यां की थाम उथाप में बां गढ़ां की भूमिका खास तौर सूं बखाण जोग है। उणा मां सूं अेक चित्तौड़ गढ़ की गौरव गाथा बिड़द बखाण पढ़ण जोग है। कवि वियोगी हरि का सबदां में-

लोहागढ़ त्यौ सिंहगढ़, बांधव रणथंभोर।
ओरहु गढ़ सिरमोर पे, सब में गढ़ चित्तौड़।।

इतिहासकारां अर साहित्यकारां ज्यां में योरप का विद्‌वान भी सामिल हैं- चित्तौड़ नै सारां गढ़ां को सिरमोड़ मान्यो है। ई गढ़ की जमीं को अेक-अेक रज-कण जोधारां लोही सूं सींचड़ो है। ई को अेक-अेक भाठो सूरबीरां का रगत का गारा सूं चणीज्योड़ो है। भारत भर में आपका नाम सूं जाण्यो जावा वाळो राजस्थान को ओ गरबीलो गढ़ कुण सी सदी में बण्यो। कुण बणायो? ईं की पूरी छाण बींण हाल तांई अधूरी है। जित्ती सी खेज हुई है ऊं मुजब मौर्य वंशी राजावां ईं किला नै बणायो। केई केवै कि मौर्य बंसी राजा सम्प्रति ई गढ़ नै बणायो तो दूजा केवैं के मौर्य राजा चित्रांगद ईं गढ़ नै बणार ईं नै चितरकोट या चित्तौड़ नाम दियो। चौतरफ दूर-दूर तांई फैल्या मैदान के बीच खड़ी एक ऊंची डुंगरी पर ओ गढ़ बण्यो हुयो है। चित्तौड़ सूं ७ मील दूर बण्या मानसरोवर तालाब की पाल पर बिकरमी संवत् ७७० को एक सिलालेख लागेड़ो है, जिसूं जाणी जावै है के उण समै मौर्य राजा मान चित्तौड़ में राज करतो हो।

मौर्या के बाद ओ गढ़ गहलोतां (सीसोदियां) के हाथ आयो। बाप रावळ कै ऊक बाद होवणियां रावलसिंह ई गढ़ ने जीत'र आपका राज्य नागदा (नागद्रह) में मिलायो। जदसूं अंदाजन तेरहसौ बरसां तांई ओ गढ़ अर आ धरती गहलोतां कै पगां हेटै बणी री। ई की रिच्छा में गहलोतां आपकी हर पीढ़ी में घणां बलिदान दिया अर आपका रगत सूं सिनान करार ईं गढ़ का गौरव नै अमर बणाय दीधो।

मुसलमाणां का राज में ई गढ़ पर पहलो हमलो अलाऊदीन खिलजी को हुयो। जद सीसोदा का राणा गढ़ लखमणासी का १३ बेटा, माथै रगत को टीको काढर बारी-बारी सूं चित्तौड़ की सुतंत्रता देवी के भेंट चढ़ता चल्या गिया। चित्तौड़ की कुल देबी नै आपका माथा अरपित कर रगत सूं धपाड़ दीधी। हजारां वीर राजपूताण्यां कै साथ महाराणी पदमणी जौहर की आग में जळर ईं गढ़ का नाम नै अमर बणाय दीधो। हजारां हीं वीर राजपूतां केसर्‍या बानूं धारण कर रण में प्रळै मचाता हुआ ई गढ़ की रिच्छा में कट पड़या। अलाउद्दीन बिफल मनोरथ पाछो दिल्ली लौटगो।

दिल्ली गयो अलावदी, कैदी कर्‍या रतन्न।
रजपूतां ही राखियो, जद तो कीध जतन्न।।

दूजी बार बिकरमी संवत् १५८९ में गुजरात को सुलताण भादरस्याह ई गढ़ पर ताकत आजमायी कीधी। जद भी राजपूतां आपका माथां की भेंट चढ़ार चित्तौड़ की देवी नै तिरपत कीधी ही। महाराणा सांगा की विधवा राणी हाडी करमेती हजारां रजपूताण्यां कै साथ आग की भेंट चढ़र चित्तौड़ का नाम का गौरव ने बणायो राख्यो।

तीसरां-जमाना को जबरदस्त बादस्या अकबर ईं गढ़ ने विकरमी संवत् १६२४ में आं घेर्‍यो। छै महीनां बाद गढ़ फत हुयो।

जां चित्तौड़ न तोड़ियो, तां की कीधो काम।
अकबर हिये बिचार ओ, जक नहिं आठो जाम।।

चित्तौड़ नी तोड्यो तो दुनियां में आर के कर्‍यो। अकबर का मन में आठों जाम आही बात खटक री ही।

दळ बळ सूं घेर्‍यो दियो, प्रबल हुमायू पूत।
गहलोतां चित्तौड़गढ़ मिल कीधो मजबूत।।

अकबर दळबळ कै साथ चित्तौड़ का गढ़ नै जा घेर्‍यो। सिसोदिया ज्यान की बाजी लगार ऊं गढ़ को बचाव करण नै सामनै आया।

उठै सोर झाळां, आभ धुवां अंधार।
ओळा जिम गोळा पड़े, मेछां कटक मंझार।।
भुरजमाळ फण मंडली, सोर झाळ विष झाळ।
जाण सेष जैठो जमीं, मिस चित्तौड़ कराळ।।

तोपा सूं गौळा ओळा, यौं बरस रीया है बारूद सूं उठी झळ अर धुंवां सूं आकाश में अंधेरो छा गियो है। गढ़ का बुरजां सूं दगती तोपा की झांळ-सेस नाग का सहस फणां सूं निकलती विष झाल कै समान दरसावै है, मानो साक्षात सेस नाग ही चित्तौड़ का मिस सूं जमीन पर कुंडली जमाय बैठा हैं।

सूनी थाहर सींहरी, जाय सकै नहिं कोय।
सींह खड्यां थह सींहरी, क्यौंन भयंकर होय।।
किसू सफीलां भुरज की, काहू बजर कपाट।
कोटां नै निधड़क करै, रजपूतां रा थाट।।

सिंह की मांद चाहे सूनीहो, फेर भी ऊमै जाबा की हिम्मत कोई नीं कर सकै तो सिंह ऊभाँ इसो कुण हौ जो उंमै जाबा को साहस करै। गढ़ की दिवारां अर बजर जिस्या किंवाड़ां को आज के महतव है। आज तो रजपूतां की छाती की दिवार ई गढ़ नै अटूट बणा राख्यो है।

पण लीधो जैमल पतै, मरस्यां बांधर मोड़।
सिर साजै सूं पा नही, चकता नूं चित्तौड़।।

गढ़ का रिछपालां जैमल और पतै-मोत को सेहरो बांधर परतिग्या कीधी के जीवतै दम मुगलां नै चित्तौड़ गढ़ पर चढ़ण नहीं देवांगा। सिर कट्या ही ईं गढ़ पर अकबर चढ़ सके लो।

राणा रा धिन रावतां, गाढ़ा आदर गाढ़।
पायो अकबर पानड़ै, चित्रकोण जळ चाढ़।।

राणा का राजपूतां नै धन्य है- गाढ़ा रंग हैं, स्याबास है। अकबर जिसा जोरावर बादस्याह ने आपको पौरस दिखार चित्तौड़ पर पाणी चढ़ा दीधो। चित्तौड़ का जस नै अमर कर दीधो। चित्तौड़ गड़ का ईंधेरा को बखाण करतां बांकीदास लिखै हैं।

साहतणं खूनी सवळ, आय बच्या इण ठौड़।
ओ सातों अकलीम में, चावो गढ़ चित्तौड़।।
दिन दुलहां माणीगरां, इण गढ़रा धणियांह
आणी सिंहल दीप सूं, पेखर पदमणियांह।।
सिर माण्डव गुजरात सिर, दळ सझि कीधी दौड़।
उण सांगारो बैसणों, चंगो गढ़ चित्तौड़।।

महिला एक विचारणीय प्रश्न

✍ पुष्पा चोपड़ा

रेस्पेक्ट यानि आदर-सम्मान। आदर तो हर मनुष्य के लिए होना चाहिए, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, ऊंच हो या नीच, अमीर हो या गरीब, आखिरकार वह मनुष्य है, हमारी बिरादरी का है। महिलाओं के लिए कुछ विशेष आदर हमारे भारत में बहुत पुरातन काल से चला आ रहा है। वेदों में कहा भी गया है ''यत्र नारी पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। इसी प्रकार और भी उक्तियां महिलाओं के लिए मिल जाएगी जिनसे हमारी स्थिति का अन्दाजा लगाया जा सकता है। दुनिया में हम भारतीय महिलाओं का अपना विशेष महत्व है, स्थान है, इसमें कोई दो राय नहीं।

अब स्थिति यह है कि हम आदर पाने में अपने को कितना सक्षम रखती हैं। क्योंकि यह एक भावना है कोई वस्तु नहीं। हमें हमेशा प्रयासरत रहना होगा उसी अनुरूप कार्य भी करना होगा, जैसे एक बच्ची पैदा हुई, हम उसे उचित स्नेह दें- सम्मान दें। हम उसे जिस प्रकार का स्थान देंगे परिवार तथा समाज के लोग उसे उसी प्रकार स्वीकार करेंगे। लड़की की शिक्षा-दीक्षा, लालन-पालन लड़कों के बराबर करे। आगे जाकर शादी में हम अपनी लड़की के लिए जिस प्रकार के ससुराल और दामाद की अपेक्षा करते हैं, अपनी बहु के लिए भी वैसा ही वातावरण दें। यह सब कब हो पाएगा, जब हम महिलाएं एक दूसरे के प्रति आदर का भाव रखें, उन्हें उचित सम्मान दें, उनकी पीड़ा में सहभागी हों।

इसके विपरीत आज स्थिति बड़ी विषम है- दर्दनाक है। वधू-दहन, तलाक प्रताड़ना आदि बढ़ती जा रही है। इसके लिए प्राय: सेमिनार होते हैं, सरकार कानून द्वारा इसका समाधान ढूंढ निकालने को व्याकुल है। बहुत सारी महिला-संस्थाएं भी कार्यरत हैं। इन सबसे काफी जागरण आ भी रहा है, पर मेरी समझ से बात तब तक नहीं बनेगी जबतक हम स्वयं की रक्षा न करें। हम पढ़ी-लिखी महिलाओं का विशेष उत्तरदायित्व बनता है। हम बात करते हैं देहातों में उन अशिक्षित महिलाओं की जो १००/- रु. देकर लड़की की पैदाइशी पर उसे मरवा डालती हैं और शिक्षित महिलाएं भ्रूण टेस्ट करवाकर उसका अस्तित्व ही समाप्त कर देती हैं। हम अपने भाषणों में प्राय: मोटरसाइकिल, टी.वी. दहेज में नहीं मिलने पर वधू-दहन जैसी मर्माहत एवं निर्मम हत्याओं की चर्चा करते हैं- कभी यह क्यों नहीं कहते कि एक आई.ए.एस. की कीमत ४० से ५० लाख, आई.पी.एस. की २० से २५ लाख और इसी प्रकार सी.ए. इंजीनियर और डॉक्टर आदि की है उसे हटाया जाये। आज महिलाओं द्वारा संचालित होस्टल, वर्किंग वुमन होस्टल में महिलाओं की क्या शर्मनाक दशा है, यह किसी से छिपी नहीं।

अंत में मैं तो यही कहना चाहूंगी कि भगवान ने पुरुष और महिला दो वर्ग बनाकर भेजा है। हम महिलाएं आपसी संगठन तथा वर्गीय शक्ति बढ़ायें, एक दूसरे के दुख-दर्द बांटें, उन्हें ऊंचा उठाने में अपना भरपूर सहयोग तथा अच्छे संस्कार डालें। बात तभी बनेगी सम्मान तभी मिलेगा। कहा भी गया है ''दूसरों की जय के पहले खुद की जय कर।''●

परिवार में गहराती विभाजन दीवार

✍ सत्यनारायण सिंहानिया

अध्यक्ष, कानपुर शाखा

परिवार उस समूह को कहा जाता है जहां पर एक छत के नीचे प्रेम, त्याग, सहिष्णुता, धैर्य व भिन्न-भिन्न रिश्तों को जीने का पाठ पढ़ाया जाता है। अनादि काल से हमारे पूर्वजों ने परिवार के अन्दर रहकर सर्दी-गर्मी, सुख-दुख, प्रेम, आवेश आदि सभी भावनाओं को एक ही वृत्त में अनुभव करने का अभ्यास किया और हम सभी को भी कराया। परिवार वास्तव में वह सुखद अनुभूति है जिसका रसास्वादन करने वाला प्राणी जीवन में कभी दुखी नहीं रहता और समाज व प्रदेश में भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। आकांक्षाओं, अभिलाषाओं का अभ्युदय तथा परिस्थिति अनुरूप नियंत्रण एवं समय परिवार से ही हम सीख पाते हैं। इधर कुछ दशकों से परिवार की महत्ता को हम कमकर आंक रहे हैं। संयुक्त परिवार से या तो हम अपने को पृथक करने में लगे हैं या परिवार में रहते हुए भी विभाजन की अदृश्य दीवार परिलक्षित होने लगी है। आज परिवार की परिभाषा ही बदल रही है, परिवार को हम पति-पत्नी एवं अपने बच्चों के रूप में देखते हैं और यही स्थिति दुखदायी है।

पूर्वजों के लगाए गए वटवृक्ष की प्रत्येक शाखा का अपना एक महत्व है जिस प्रकार शरीर का प्रत्येक अंग अपने स्थान पर महत्वपूर्ण है, उसी प्रकार परिवार के प्रत्येक प्राणी की अपनी उपयोगिता है किन्तु हम उस उपयोगिता को समझने में नाकाम हो रहे हैं निज स्वार्थ एवं बढ़ती महत्वाकांक्षाएं परिवार से विमुख करने को हमें प्रेरित कर रही है और हम बिना सोचे विचारे अपने परिवार में साथ रहते हुए विभक्त हो रहे हैं। मेरे विचार में यह हमारे समाज के लिए चिन्तनीय विषय है। जो समाज दूसरे वर्ग एवं समुदाय की सहायता हेतु सदैव तत्पर रहा है वह आज अपनों से खुद को अलग-थलग करने में लग गया है। इस परिस्थिति को रोकना आज की आवश्यकता है। एकाकीपन के स्थान पर आपसी सौहार्द्र, समन्वय, सामंजस्य, संयम, त्याग, सहिष्णुता, अपनत्व की भावना को हमें पुन: प्रतिस्थापित करना ही होगा और अपने पाकरिवारिक सदस्यों एवं अबोध बालकों को भी इन्हीं संस्कारों की घुट्टी हमें पिलानी ही होगी अन्यथा हम बिखर कर जिस प्रकार टूट रहे हैं, भौतिकता के आवरण को ओढ़ कर कष्ट प्राप्त कर रहे हैं और आगे चलकर इन परिस्थितियों पर अंकुश लगाना कठिन ही नहीं असंभव हो जाएगा। जिस प्रकार दूध और पानी का साथ है उसी प्रकार हम और हमारे परिवार का भी साथ होना चाहिए जिससे चाहकर भी कोई एक दूसरे को अलग न कर पाये।●

सोने की चिड़िया

✍ शान्ति कुमार धनावत

प्राक् ऐतिहासिक युग स्यूं भारत नै सोने की चिड़िया कैवे। भारत ने लुटण वास्ते विदेशा स्यूं ग्रीस्, आरब, तुरकी, मंगोल, ईराक, अफगान आदि देशां स्यूं हिमालय री दुर्गम गिरी पथ पार करकं आक्रमण कर्यो। उनम स्यूं प्रमुख सिकंदर, तैमुर, नादीरशाह आदि हुया। जका ई सोने की चिड़िया न आप र जाल म फांस के भारत मा बस जावण रो निर्णय लियो। ई सिलसिला स्यूं मुगल भारत म शासन करियो। कई शताब्दी र बाद पुर्तगाल, फारसी, अंग्रेजों री लुभावनी नजर ई सोनेरी चिड़िया ऊपर पड़ी। बैं भी लुटण वास्ते आवा और आपरो साम्राज्य विस्तार करीयो। इण म अंग्रेज हमेशा आगे रहया। ई लूटपाट म भारत रो सगला स्यूं बड़ो हिस्सो अंग्रेज प्राप्त करियो। विदेशी शक्तियां मं अंग्रज सोने री चिड़ियां ने बिना रोक-टोक स्यूं जी भर लूटी और ईंन खोखलो करणै म कोई कसर कोनी छोड़ी। पर बैं असमर्थ रहया।

म्हारो ओ ही कहणो है कि भारत सोने री चिड़िया काल भी ही और सदा ही रैवैला। कारण ओ है कि भारत री संस्कृति, ज्ञान, साहित्य और परम्परा म अद्‌भुत शक्ति है। स्वाधीनता र ५८ बरसां म भारत पाछो उठ खड़्यो हुयो है। आज रा कम्प्यूटर और विज्ञान र युग म भी विदेशां म आपरो स्थान बणा पायो है। आर्थिक स्थिति म भी भारत उन्नति पर है। कई नीचे लिख्या उदाहरणां स्यूं म्हारी बातां साफ प्रमाणित हुवै है :

१. देश म खनिज पदार्थ सब प्रान्ता म प्रचुर मात्रा म है और विदेशां म भी रोजाना प्रचुर मात्रा म जा रिया है।

२. देश म कृषि री जमीन काफी मात्रा म कम हुई है फेर भी आज अनाज रा भण्डार भरती है।

३. विदेशां स्यूं आयात पूरा जोर स्यूं है निर्यात री दौड़ म भी भारत कम नहीं है।

४. फल, साग, सब्जी, र मामले म भी देश आपरी पूरी प्रगति पर है।

५. सोने रो आयात है तो जेवरां र निर्यात म भी बढ़ोत्तरी घणी मात्रा म हुई हैं।

६. कम्पुटर री पढ़ाई तथा हर काम म भारत री शाखा विदेशां म वणी है। भारत देश रो नाम रोशन हो गयो है।

७. जब भारत आजाद हुयो जनसंख्या ३६ करोड़ ही और खाद्य समस्या बहुत ही गंभीर ही। अमेरिका री शर्तां पर आपां न (पि.एल्. ४८०) गेहूं मिलता हा। ई बीच कृषि योग जमीन कम हुई। जनसंख्या तिगुणी हुयी फिर भी खाद्य प्रचुर मात्रा म उपलब्ध है। आज भारत देश खाद्य सामग्री रो निर्यात भी कर रीयो है।

८. धर्म र प्रति लोगां री श्रद्धा बढ़ी है। दुर्गा पूजा, दिवाली, होली, शिवरात्रि, राखी, जन्माष्टमी आदि त्योहारां म मन खोल र खर्च करै, संतो रा प्रवचन, हनुमान चालीसा, भजन कीर्तन आदि अनुष्ठान घणी भक्ति भावना स्यूं मनावै।

९. अबार ताजा घटना है सोनामी लहरां स्यूं तमिलनाडू, आंध्र प्रदेश और अंडमान निकोबार, म हुई घटना म लाखां लोगा री जान गई, लाखां लोग बेघर हुया। अमेरिका मदद् वास्ते हाथ बढ़ायो पर भारत आपरो स्वाभिमान कायम राखतो हुयो विदेशां री मदद लेवण न इनकार कर दियो।

अै बातां स्यूं ओ प्रमाणित होवै है कि भारत आज भी सोने री चिड़िया है। शिल्प वाणिज्य, शिक्षा, मसीनरी, डाक्टरी, आणविक शोध कार्य एवं कारीगरी ज्ञान म भारत जकी तरह स्यूं आगे बढ़ रह्यो है। बो दिन दूर नहीं जद भारत विश्व म विशिष्ट स्थान प्राप्त करैला। आपणो देश भारत सोने री चिड़िया काल भी हो, आज भी है, और काल भी रवैला।●

नान्हों सो सूरज

आओ मिल 'र नान्हो सो सूरज उगावां,
अन्धारो है बठै, दीपक जलावां।
जठै सूरज री किरणां नीं पहुंचे,
बठै आपां थोड़ो चानणो दिखावां।।
आओ मिल 'र नान्हो सो सूरज उगावां...
भूख जठै करै बाथेड़ो,
करुण रो बठै कोर पहुंचावां
उण कंठां तांही अन्न-जल पहुचावां
आओ मिल 'र नान्हो सो सूरज उगावां...
तन ढकण री मजबूरी सी दीखै,
बठै चाल 'र आपां चीर बढ़ावां
बेसहारे री लाठी बण 'र
बांरी मंजल पार लगावां
आओ मिल 'र नान्हो सो सूरज उगावां...

- नथगिरि भारती, नोहर

फूलों की बरसात

आज हमारे नये अध्याय की शुरूआत हो रही है।
सभी चेहरों पे मुस्कान के फूलों की बरसात हो रही है।
आगे बढ़ते रहो सदा ही, यह मेरी है शुभकामना,
कोई जो पीछे रह जाए तो, उसका भी दामन थामना।
तुम सब ही हो सबसे बेहतर, हर जगह यही बात हो रही है।
सभी चेहरों पे मुस्कान के फूलों की बरसात हो रही है।
बाधाएं तो आयेंगी फिर भी, हर पल आगे बढ़ते रहना,
'बंधु' भी है साथ तुम्हारे, तुम न किसी से डरना।
खुशियों से चमन महकेगा तुम्हारा, तुम भी देना सबको सहारा,
मानेंगे सभी जानेंगे सभी, हममें ही ये दुनिया खो रही है।
सभी चेहरों पे मुस्कान के फूलों की बरसात हो रही है।

●संदीप जैन, वीरपुर

कारण

ताई बोली जी !
अखिल भारतीय
मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष
माननीय श्री मोहनजी तुलस्यान
जब भी कहीं
सम्मेलन के जलसे आदि में
आते-जाते हैं
गर्मी हो या सर्दी
वे हमेशा
कोट-पैन्ट टाई में ही
नजर क्यों आते है?
समाज विकास पत्र में भी
हम कभी,
उनकी कोई फोटो
कुर्ते पाजामे धोती आदि में
नहीं देख पाते हैं
इसका क्या कारण है नाथ?
मैंने कहा- ताई !
तेरी तो बुद्धि है हॉफ
कारण तो है बिल्कुल साफ
बड़े लोग जिस परिधान को
एक बार धारण कर लेते हैं
उससे कभी मुंह नहीं मोड़ते
वे मर जाते हैं, पर
अपना परिधान नहीं छोड़ते जैसे-
एक बार धारण करने के बाद
- गांधी जी ने कभी लंगोटी नहीं छोड़ी
- नेहरूजी ने टोपी नहीं छोड़ी
- सुभाष बोस ने वर्दी नहीं छोड़ी और
- शास्त्री जी ने धोती नहीं छोड़ी

मनुहार

ओ अम्बर के काले बादल !
मन-मौजी मतवाले बादल !!
ओ बनजारे प्रति डगर के, झुक-झुक नजर जुहार करें।
जम कर बरसो आज यहीं पर, रूक जाओ मनुहार करे।।

आस तेरे आने की करती
तड़क गई तरसाई धरती
थक गई धीरज धरती-धरती
तुम जो बरसो तो फिर से नूतन सृजन श्रृंगार करें।
जमकर बरसो आज यहीं पर, रूक जाओ मनुहार करें।।

ऊंचा चढ़ मत यूं इतराए
गरज-गरज मत शोर मचाए
सब समझूं मैं, जो तू चाहे
छोड़ गुमान गुमानी आजा, हिल-मिल रास विहार करें।
जमकर बरसो आज यहीं पर, रूक जाओ मनुहार करे।।

टणमण-टणमण करता आजा
रिमझिम रिमझिम रस बरसाजा
तू घर आए तो इन्द्र राजा !
सुख के साज सजे सारे, मन की वीणा झंकार करे।
जमकर बरसो आज यहीं पर, रूक जाओ मनुहार करे।

● ताऊ शेखावाटी

ये शहर

यहां हर तरफ बरपा खौफो खतर है
सहमी हुई सी हरिक रहगुजर है

यहां जिंदगी है फकत इक फसाना
कि मुर्दा परस्तों का ये शहर है

हर शक्ल, वादा, वफा सब है नकली
नकली यहां आईने की नजर है

खुदगर्जी, धोखा है मजहब यहां का
यहां पत्थरों के दिल ओ जिगर है

बहुत ही है मुश्किल किसी दर पे कहना
ये दर मेरे गमख्वारों का दर है

जजबात पर भी है बंदिश यहां पर
दिल अपनी धड़कन से बेखबर है

इन्सान आदी यहां तीरगी का
कुछ इतना कि रोशनी का ही डर है

तहजीब की जल रही हैं चिताएं
अदब का जनाजा हर इक दोश पर है

शैतानी फितरत पे है नाज इतना
खुदाया दुआओं का जैसे असर है

यहां का हवा ना लगे आसमां को
ऐ रूसवा वगरना कहर ही कहर है

● जय कुमार 'रुसवा'

अथाह जल में विचरण करने वाला महामत्स्य गर्व नहीं करता किन्तु थोड़े से जल में रहने वाली मछली फुरफुराती है, अर्थात् धैर्यवान कभी विचलित नहीं होता।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा

लन्दन में राजस्थानी फाउन्डेशन की स्थापना

हरि प्रसाद कानोड़िया का प्रशंसनीय योगदान

२२ मई २००५, लंदन। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया द्वारा उनके लंदन स्थित निवास पर आयोजित एक भोज समारोह के अति उत्साहप्रद वातावरण में राजस्थानी फाउन्डेशन की स्थापना की गई। राजस्थानी फाउण्डेशन के पदाधिकारियों में हैं सर्वश्री डा. कृष्ण कुमार सरावगी - अध्यक्ष, अशोक संचेती - उपाध्यक्ष एवं संजीव अग्रवाला - मंत्री। फाउण्डेशन का पंजीकरण लंदन में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के साथ संयुक्त रूप से किया गया है। राजस्थानियों की एक अपनी पहचान बने, आपसी सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आए इसके मुख्य उद्देश्य हैं। समरसता, एकबद्धता के प्रति जागरुकता के साथ-साथ आर्थिक सामाजिक संचेतनता के प्रसार में भी यह संस्था सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करेगी। फाउण्डेशन का लक्ष्य होगा विश्वव्यापी

उद्घाटन के अवसर पर लन्दन के कुछ विशिष्ट जन।

राजस्थानियों तथा भारत में या भारत के बाहर भारतीय मूल के लोगों के मध्य परस्पर सहयोगिता का विकास करना।

इसके प्रारम्भिक सामान्य कार्यक्रमों में हैं संवाद संचार, सदस्यता निर्देशिका का प्रकाशन, होली-दीवाली एवं लंदन में भारतीय कलाकारों द्वारा अन्यान्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आयोजित करना। सामाजिक आर्थिक विकास एवं शिक्षा, पेय जल तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न योजनाओं के तहत राजस्थान में एक गांव को गोद लिए जाने की भी कल्पना है। श्री कानोड़िया ने अपने उद्बोधन में कहा कि सन् १९३५ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना स्वर्गीय राय बहादुर रामदेव चोखानी की अध्यक्षता में हुई थी। कालान्तर में स्व. पदमपत सिंघानिया, स्व. रामकृष्ण सरावगी, स्व. ईश्वरदास जालान, स्व. मूलचन्द अग्रवाल, स्व. बृजलाल बियानी, स्व. भंवरमल सिंघी, श्री हरिशंकर सिंहानिया, श्री नन्दकिशोर जालान आदि जैसे विशिष्ट व्यक्तियों ने सम्मेलन की सक्रियता को चार चांद लगाया।

श्री कानोड़िया ने जानकारी दी कि उनके अतिरिक्त सम्मेलन के वर्तमान पदाधिकारियों में हैं अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश मूंधड़ा, सीताराम शर्मा, नन्दलाल रूंगटा, बालकृष्ण गोयनका, जगदीश प्रसाद अग्रवाल, ओंकारमल अग्रवाल, महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री

डा. [illegible] के. सरावगी, डा. [illegible] के साथ श्री हरिप्रसाद कानो[illegible]

रामऔतार पोद्दार, राज के. पुरोहित।

श्री कानोड़िया ने अपने भाषण में कहा कि सम्मेलन की विभिन्न उपलब्धियों में प्रमुखतम है समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक विकास में योगदान, समाज सुरक्षा, नारी शिक्षा, समाज सुधार, दिखावा एवं प्रदर्शन, दहेज तथा महिलाओं में समानता के प्रति जागरुकता, सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना, वैवाहिक परिचय सम्मेलन, सामूहिक विवाह आदि।

राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा एक हिन्दी मासिक पत्रिका 'समाज विकास' का प्रकाशन जिसकी १०,००० से अधिक प्रतियां देश के कोने-कोने में प्रसारित होती है, श्री कानोड़िया ने कहा।

लंदन में हुए राजस्थानी फाउण्डेशन के उद्घाटन समारोह में लगभग २२० समाज बन्धुओं की उपस्थिति रही। लंदन में सम्मेलन द्वारा राजस्थानी फाउण्डेशन की स्थापना विश्व भर में फैले मारवाड़ी समाज को एकसूत्र में बांधने एवं देश में सम्मेलन के माध्यम से समाज के साथ एक नवीन सम्बन्ध स्थापित करने की

समारोह में पृथक से बालक वृन्द

ओर एक मील का पत्थर साबित होगा।

राजस्थानी फाउण्डेशन, लन्दन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार सरावगी के नेतृत्व में एवं उपाध्यक्ष श्री अशोक संचेती तथा मंत्री श्री संजीव अग्रवाल के सहयोग से सफलता की नई ऊंचाइयां प्राप्त करेगा सम्मेलन को इस बात का पूरा विश्वास है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कार्यकारिणी समिति की बैठक का कार्यवृत्त

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की **राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति** की बैठक दिनांक **२८ मई २००५**, को **राजस्थान सूचना केन्द्र, कोलकाता** में सम्मेलन सभापति **श्री मोहनलाल तुलस्यान** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में कई महत्वपूर्ण चर्चाएं हुईं एवं निर्णय लिए गए।

महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने गत बैठक १९ फरवरी २००५ की कार्यवाही प्रस्तुत की, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सद्य निर्वाचित अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल बाकलीवाल का ८ मई २००५ को अमेरिका में हुए निधन से उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने सभी सदस्यों को अवगत कराया एवं उनकी याद में एक मिनट का मौन पालन किया गया।

महामंत्री ने अपनी रपट में आंध्र प्रदो के हैदराबाद में, पूर्वोत्तर के जोरहाट में एवं बिहार के पटना सिटी में हुए प्रांतीय अधिवेशनों के विषय में संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने पिछले माह रानीगंज में आयोजित बनवारीलाल भालोटिया जन्मशत-वार्षिकी समारोह एवं भवानीपटना में आयोजित नवनिर्मित अग्रसेन भवन के उद्घाटन समारोह में सम्मेलन अध्यक्ष श्री तुलस्यान की भागीदारी का उल्लेख किया।

महामंत्री श्री सुरेका ने बताया कि राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे के कोलकाता आगमन पर सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ प्रत्यक्ष भेंटवार्ता हुई। राजस्थान की राज्यपाल श्रीमती प्रतिभा पाटिल का सम्मान गोष्ठी सम्मेलन कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया के निवास स्थान पर किया गया। महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती गिरिजा व्यास के साथ वैचारिक गोष्ठी आयोजित की गई।

महामंत्री श्री सुरेका ने बताया कि उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन में तदर्थ समिति गठित की गई है एवं प्रांतीय पदाधिकारियों के नये चुनाव करवाकर शीघ्र ही अधिवेशन कराने की व्यवस्था हेतु सम्मेलन उपाध्यक्ष एवं तदर्थ समिति के संयोजक श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल से अनुरोध किया गया है। गुजरात में शाखा खोलने हेतु सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री श्री राज के. पुरोहित से वार्तालाप जारी है।

मध्य प्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी के आए हुए पत्र पर आवश्यक कार्यवाही करने हेतु अध्यक्ष श्री तुलस्यान ने उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को दायित्व दिया।

पश्चिम बंगाल सम्मेलन से आई चिट्ठी सभा के समक्ष रखी गई। उसमें उल्लेखित हाई कोर्ट द्वारा मनोनीत पदाधिकारियों के नामों को पढ़कर सुनाया गया।

अखिल भारतीय समिति की अगली बैठक पर विचार-विमर्श किया गया।

समाज विकास केसुन्दर प्रकाशन केलिए श्री जुगलकिशोर जैथलिया, श्री बाबूलाल धनानिया, श्री बंशीलाल बाहेती आदि ने प्रशंसा की।

महामंत्री ने डायरेक्टरी के विषय में बताया कि डायरेक्टरी में आजीवन एवं साधारण विशिष्ट सदस्यों के नामों को समाहित किया गया है।

महामंत्री श्री सुरेका ने सम्मेलन की आर्थिक स्थिति को कमजोर बताया।

सम्मेलन उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो पिछले तीन महीने में तीन-तीन प्रांतों के अधिवेशन काफी लोगों की उपस्थिति में सफलतापूर्वक हुए हैं। झारखण्ड में समय पर नये अध्यक्ष का चुनाव हुआ है। महाराष्ट्र में अध्यक्ष पुनर्निर्वाचित हुए हैं। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सही मायने में प्रांतों में बसता है।

मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कठोर प्रतिवाद

साहित्यकार कमलेश्वर द्वारा मारवाड़ी समाज के विरुद्ध आपत्तिजनक टिप्पणी

१६ जून। साहित्यकार एवं लेखक कमलेश्वर द्वारा मारवाड़ी समाज को शोषणकर्त्ता एवं पूर्वोत्तर, असम एवं नेपाल की समस्या के लिए दायी ठहराने के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन उनकी इस टिप्पणी एवं मंतव्य का कठोर प्रतिवाद करते हुए उनकी संकुचित मानसिकता की निंदा करता है।

श्री कमलेश्वर ने गुवाहाटी से प्रकाशित दैनिक पूर्वोत्तर एवं अन्य राष्ट्रीय समाचार पत्रों में उनके आकलन सिंडिकेट लेख ''नेपाल में इमरजेंसी हटाने का दिखावटी खेल'' में लिखा है- **''व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो अपने पूर्वोत्तर और विशेषत: असम की यह समस्या है कि वहां बाहरी शोषणकर्त्ता आ बसे हैं, जो मूलत: मारवाड़ी बनिया और छोटे व्यापारी हैं। लगभग उसी तरह के भारतीय बनिया लोग नेपाल में भी मौजूद हैं।''**

सम्मेलन इन क्षेत्रों में बसे मारवाड़ी समाज को 'बाहरी', 'शोषणकर्त्ता' एवं इन्हें 'समस्या के लिए दायी' बताने पर घोर आपत्ति करता है तथा इसका कठोर प्रतिवाद करता है। अपने आप को तथाकथित प्रगतिशील लेखक-साहित्यकार कहने वाले श्री कमलेश्वर 'छोटे व्यापारियों' को भी 'शोषणकर्त्ता' कहने से नहीं हिचकिचाते तथा देश के नागरिकों को 'बाहरी' कहकर अपनी संकीर्ण सोच का परिचय देते हुए प्रांतीयवाद, क्षेत्रीयवाद तथा भूमिपुत्र के नारे को हवा दे रहे हैं। इस तरह के विघटनकारी विचार न सिर्फ राष्ट्रीय एकता के विरुद्ध है साथ ही सामाजिक समरसता को क्षति पहुंचाते हैं। यह लेखक की क्षुद्र मानसिकता का परिचायक है।

यह बहुत दु:ख की बात है एक साहित्यकार जिससे देश की सभी जाति, सम्प्रदाय, मजहब के लोगों को एक सूत्र में बांधकर राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने की अपेक्षा की जाती है वहीं श्री कमलेश्वर जैसा वरिष्ठ साहित्यकार एक पूरे समाज को शोषणकर्त्ता घोषित कर एवं राष्ट्र के नागरिकों को 'बाहरी' एवं 'अन्दर' के दर्जों में बांटकर विद्वेष, घृणा एवं असहिष्णुता को बढ़ावा दे रहे हैं।

यह एक आश्चर्य की बात है कि कमलेश्वर जैसे वरिष्ठ पत्रकार-साहित्यकार की कलम से एक सम्पूर्ण जाति विशेष को शोषणकर्त्ता करार दे दिया जाता है। मारवाड़ी सम्मेलन श्री कमलेश्वर की इस अशोभनीय टिप्पणी की तीव्र भर्त्सना करता है एवं श्री कमलेश्वर से इसके लिए क्षमा याचना की मांग करता है। व्यक्तिविशेष शोषणकर्त्ता होता है न कि उसकी पूरी जाति, ऐसे में एक जाति विशेष को लक्ष्य कर उस पर घृणित टिप्पणी कर आपने अपने आप को छोटा किया है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने श्री कमलेश्वर को एक पत्र में उनकी इस घोर आपत्तिजनक टिप्पणी, जिसने न सिर्फ प्रत्येक मारवाड़ी को मानसिक ठेस एवं कष्ट पहुंचाया है बल्कि साथ-साथ पूरे मारवाड़ी समाज की छवि बिगाड़ने का प्रयास किया है, के लिए उनके संकीर्ण एवं विघटनकारी विचारों की घोर निन्दा तथा भर्त्सना की है तथा उनसे क्षमा याचना की मांग की है। इस पत्र को हस्ताक्षरित किया है सम्मेलन अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, सहमंत्री श्री रामअवतार पोद्दार एवं पूर्व अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान ने।

सम्मेलन ने पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा किये गये विरोध एवं प्रतिवाद का समर्थन करते हुए सभी प्रांतीय सम्मेलनों, जिला शाखाओं, पदाधिकारियों तथा सदस्यों से अनुरोध किया है कि वे सम्पादक के नाम पत्र के माध्यम से श्री कमलेश्वर के लेख का डटकर विरोध कर समाज के स्वाभिमान, प्रतिष्ठा एवं छवि की रक्षा करें।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

दिवंगत अध्यक्ष स्व. कन्हैयालाल बाकलीवाल के आकस्मिक निधन पर गुवाहाटी, नगांव, राहा, जखलाबंधा, सिलचर, लखीमपुर आदि अनेक स्थानों से शोक-संदेश व्यक्त किए गए एवं शोक सभाएं आयोजित की गईं।

जोरहाट, ९ मई। सम्मेलन के कार्याध्यक्ष श्री विजय कुमार मंगलूणिया की अध्यक्षता में एक आम सभा का आयोजन किया गया, पूर्वोत्तर सम्मेलन के नव-निर्वाचित अध्यक्ष एवं विशिष्ट समाजसेवी कन्हैयालाल बाकलीवाल के आकस्मिक निधन पर भाव भीनी श्रद्धांजलि दी गई। कार्याध्यक्ष मंगलूणिया ने बाकलीवाल जी के सपनों और कार्यों को पूरा करने का संकल्प किया।

नवयुवक मंडल के अध्यक्ष सुशील कलोणी, मारवाड़ी युवा मंच के शाखाध्यक्ष अनिल केजड़ीवाल, जुगलकिशोर सिंघी, जोरहाट शाखा के सचिव राजकुमारी सेठी, सम्मेलन के उपाध्यक्ष प्रदीप खदरिया, पूर्वोत्तर माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष काशीरामजी सोमानी आदि ने बाकलीवाल की समाज के प्रति कार्य करने की क्षमता की सराहना की। स्वर्गीय बाकलीवालजी को पुष्पांजलि अर्पित करने वालों में थे जोरहाट के चाय उद्योगपति व चेम्बर के पूर्व अध्यक्ष सर्वश्री ए.के. बरुवा, जोरहाट जिला ग्राम पंचायत के अध्यक्ष राणा गोस्वामी, मुरलीधर गट्टानी, ओमप्रकाश गट्टानी, दुलीचंद अग्रवाल, महेश बेड़िया, नेमीचंद करनानी, पं. द्वारका प्रसाद दधीच, प्रमोद सिंघानिया, अनिल कुमार बरुवा के अलावा सम्मेलन मुख्यालय के उपाध्यक्ष प्रदीप खदरीया, देरगांव शाखा के मंत्री चिरंजीलाल खेतान, शिवसागर शाखा मंत्री विजय कुमार चितावत आदि तथा समाज के गणमान्य व्यक्ति, विभिन्न संस्थाओं के अध्यक्ष एवं मंत्री उपस्थित थे।

तिनसुकिया - स्व. कन्हैयालाल बाकलीवाल के सम्मान में तिनसुकिया इकाई द्वारा एक शोक सभा हुई। सम्मेलन के अध्यक्ष कुन्दनमल शर्मा व सचिव सुरेश खेतान समेत अनेक लोगों ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर श्री बाकलीवाल के निधन को समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताया। इस मौके पर अधिवक्ता अशोक अग्रवाल ने कहा कि श्री बाकलीवाल का एक सपना था कि गुवाहाटी में महिला छात्रावास का निर्माण हो। अत: महिला छात्रावास का निर्माण कर हम सभी श्री बाकलीवाल को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

बोकाखात - बोकाखात में आयोजित शोकसभा में विभिन्न धार्मिक व सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी, कार्यकर्ताओं के अलावा काफी महिलाओं ने भी हिस्सा लिया। सभा की अध्यक्षता श्री सत्यनारायण मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष काशीराम चौधरी ने की। सभा को काशीराम चौधरी, देवी प्रसाद चौधरी, हरकचंद जैन, विनोद जालान, पवन मोर, मनोज जैन एवं संगीता गोयनका ने संबोधित किया। राष्ट्रभाषा सेवा समिति के सह-सचिव महेश अग्रवाल ने श्री बाकलीवाल का जीवन वृतान्त सभा के समक्ष रखा।

दीमापुर - पूर्वोत्तर क्षेत्र के व्यवसायी समाज ने सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री कन्हैयालाल जैन (बाकलीवाल) के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि नागालैण्ड के निवासियों के विकास के लिए किए गए स्व. जैन के बहुमूल्य योगदान हेतु सन् २००० में नागालैण्ड के मुख्यमंत्री श्री एस.सी. जमीर ने उन्हें 'ए मैन ऑफ नागालैण्ड' की उपाधि प्रदान की थी।

होजाई - श्री टोरमल मोर की अध्यक्षता में एक शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें समाज एवं सम्मेलन के विशिष्ट पदाधिकारी ओंकारमल अगरवाल, मंगलचंद सुरेका, मारवाड़ी पंचायती के अध्यक्ष राजेन्द्र भीमसरिया, परमानन्द सुरेका, मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष राजेश केजड़ीवाल, निरंजन सरावगी एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। सभा में दो मिनट का मौन रखा गया एवं दिवंगत आत्मा की चिरशांति के लिए प्रार्थना की गई। श्री ओंकारमल अग्रवाल ने कहा कि समाज ने न सिर्फ प्रादेशिक अध्यक्ष खोया है, बल्कि एक जुझारू नेता को खो दिया।

जखलाबंधा : विकलांग सहायता शिविर आयोजित

१४ मई को नगांव लायंस क्लब के सहयोग एवं पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की कलियाबर इकाई के सौजन्य से एक विकलांग परीक्षण एवं सहायता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों को परीक्षण के बाद व्हील चेयर, ट्राइसाईकिल, हियरिंग एंड कैलिपर स्टिक आदि सामग्रियाँ नि:शुल्क वितरित की गई।

पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कोलकाता : उच्च न्यायालय द्वारा निर्वाचित/घोषित पदाधिकारी

कोलकाता उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त चुनाव अधिकारी की देखरेख में आयोजित प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का जो चुनाव ३१ जुलाई २००४ को सम्पन्न हुआ था उसके नतीजे पर कतिपय व्यक्तियों द्वारा उठाई गई आपत्ति को माननीय न्यायालय ने खारिज कर दिया है एवं चुनाव अधिकारी श्री विद्युत कुमार बनर्जी की रपट को स्वीकार किया है। हाईकोर्ट के आर्डर की कापी सम्मेलन कार्यालय को प्राप्त हुई है।

उक्त रिपोर्ट के अनुसार निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित घोषित किये गये हैं :-

अध्यक्ष- लोकनाथ डोकानिया, उपाध्यक्ष- विश्वनाथ सराफ (रानीगंज), रामनिवास शर्मा, विश्वनाथ सुल्तानियां, सावरमल अग्रवाल, श्री भगवान खेमका एवं अशोक काजरिया (दुर्गापुर), महामंत्री- गोपाल अग्रवाल, संयुक्त मंत्री- गोपी धुवालिया एवं पुरनमल तुलस्यान, कोषाध्यक्ष- विश्वनाथ भुवालका।

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति

विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग हेतु रु. ५० लाख का फण्ड बनाने का निर्णय

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, पटना के महासचिव श्री प्रह्लाद राय शर्मा (सुल्तानिया) ने सूचित किया है कि शिक्षा समिति ने एक ५० लाख का कोरपस फण्ड बनाने का निर्णय लिया है ताकि समाज के मेधावी जरूरतमंद छात्र/छात्राओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु छात्रवृत्ति प्रदान की जा सके।

समाज के महानुभावों व शिक्षा प्रेमियों से करबद्ध प्रार्थना की गई है कि इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग तन-मन व धन से कर उनका मनोबल बढ़ाएं ताकि समाज के मेधावी छात्र/छात्राओं को आर्थिक सहयोग दिया जा सके।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

बलांगीर : नवनिर्मित सेवा सदन का लोकार्पण

मारवाड़ी पंचायत, बलांगीर द्वारा नव निर्मित सेवा सदन का लोकार्पण तारीख १८.०५.२००५ को माननीय सांसद श्री सुरेन्द्र लाठ के कर कमलों द्वारा हुआ। सभा में विशिष्ट अतिथि शहरी विकास व सहकारी उद्योग मंत्री श्री कनक बर्धन सिंहदेव, सम्मानित अतिथि बलांगीर सांसद श्रीमती संगीता कुमारी सिंहदेव, जिलापाल श्री नारायण चन्द्र जेना, श्री नारायण चन्द्र दास, नगरपाल राधा केशव मिश्र, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल, प्रान्तीय उपाध्यक्ष श्री किशन लाल अग्रवाल, मारवाड़ी युवा मंच अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल आदि उपस्थित थे। श्री सुरेन्द्र लाठ द्वारा एक वाटर कूलर देने की घोषणा की गई। श्रीमती संगीता कुमारी सिंहदेव ने युवा मंच को शव बाहन गाड़ी देने एवं सांसद कोटा से कांटाबाजी, पटनागढ़, टिटिलागढ़ युवा मंच को एक-एक एम्बुलेंस देने की घोषणा की। समारोह की अध्यक्षता श्री हरिनारायण ने किया।

लोसिंगा, टिटिलागढ, सोनपुर, बेलपाड़ा, तुसरा तथा अन्य शाखाओं से सभी सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सभा का संचालन श्री मोहनलाल अग्रवाल ने किया। धन्यवाद ज्ञापन श्री कुलभूषण गुप्ता द्वारा किया गया।

भवन में ११ कमरा है। आगे इसमें ऊपर का भाग का निर्माण करवाने की योजना है। श्री सुरेन्द्र लाठ द्वारा सांसद निधि से पांच लाख रुपये की सहायता राशि मिली थी। बलांगीर से समाज के भाइयों द्वारा सहायता प्रदान किया गया था। भवन सरकारी अस्पताल के नजदीक होने के कारण मरीजों के साथ आने वालों के लिए आवास हेतु निम्न शुल्क में दिया जाता है। बलांगी टाउन में पहला आवास भवन का निर्माण किया गया है। भवन की जमीन १९७६ में स्वर्गीय लक्ष्मीराम अग्रवाल की धर्मपत्नी श्रीमती भगवानी देवी ने मारवाड़ी पंचायत को दिया था। निर्माण कार्य २००० में चालू किया गया था। भवन के निर्माण के लिए सरकारी कार्य के लिए सर्वश्री गौरीशंकर अग्रवाल, बेदप्रकाश अग्रवाल का सराहनीय योगदान रहा। निर्माण कार्य के लिए श्री हरिनारायण जैन- अध्यक्ष, सोहनलाल अग्रवाल, प्रकाश चन्द्र अग्रवाल, रघुनाथ अग्रवाल, खेमचंद अग्रवाल तथा बदनराम अग्रवाल का योगदान रहा।

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

जबलपुर : मुकुन्ददास माहेश्वरी सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार से अलंकृत

नर्मदा नर्सरी एवं माहेश्वरी विद्या निकेतन, हनुमानताल जबलपुर के संस्थापक अध्यक्ष एवं प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मुकुन्ददास माहेश्वरी को प्रतिभा सम्मान समारोह में जबलपुर संभाग के आयुक्त श्री इन्द्रजीत शंकर दाणी द्वारा सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

जिले में सर्वाधिक छात्र व अंक लेकर मेरिट में आने पर नर्मदा नर्सरी के संस्थापक मुकुन्ददास माहेश्वरी को रजत शील्ड प्रदान करते कमिश्नर श्री दाणी।

प्रतिभा सम्मान समारोह प्रतिवर्ष जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा आयोजित किया जाता है। इस समारोह में कक्षा पांचवी और कक्षा ८वीं की मैरिट सूची में आये छात्र-छात्राओं का सम्मान किया जाता है। उन्हें प्रशस्ति पत्र और उपहार भेंट किए जाते हैं और संस्थाओं के संस्थापकों और प्राचार्यों को आमंत्रित कर सम्मानित किया जाता है।

सत्र २००४-०५ में यह समारोह जबलपुर जिले के जिला शिक्षा अधिकारी श्री धीरेन्द्र चतुर्वेदी के सौजन्य से जबलपुर सम्भाग के आयुक्त श्री इन्द्रजीत शंकर दाणी के मुख्य आतिथ्य जबलपुर कलेक्टर श्री संजय दुबे की अध्यक्षता एवं अधीक्षक पुलिस श्री निवास राव के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

सन् १९७८ में निर्मित नर्सरी व माहेश्वरी विद्या निकेतन, हनुमानताल, जबलपुर नगर की एक सुप्रसिद्ध शिक्षण संस्था है। आज

जबलपुर नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र में इस संस्था की १६ शालाएं हैं जिनमें लगभग दस हजार छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। शुभारंभ से ही बोर्ड परीक्षाओं में स्थान प्राप्त करने की एक उत्कृष्ट परम्परा इस संस्था में निर्मित है। १९८३-८४ से २००४-०५ तक इस संस्था के ११५ छात्र-छात्राएं कक्षा ५वीं की मैरिट सूची में स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

स्व. कंन्हैयालाल बाकलीवाल के प्रति श्रद्धांजलि

गुवाहाटी, १० मई। पूर्वोत्तर प्रादेशीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय अध्यक्ष श्री नवल किशोर मोर, प्रांतीय महामंत्री श्री अनिल अग्रवाल, उपाध्यक्ष (मुख्यालय) श्री अरुण अग्रवाल, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल जैना एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मधुसूदन सिकरिया ने श्री कन्हैयालाल बाकलीवाल के आकस्मिक निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्व. बाकलीवाल का आकस्मिक निधन एक अपूरणीय क्षति है। उनके निधन से सम्मेलन के साथ-साथ मंच परिवार भी मर्माहत है। श्री बाकलीवाल केवल सम्मेलन के अध्यक्ष नहीं थे बल्कि वे हमेशा युवाओं के प्रेरणास्रोत रहे हैं। श्री बाकलीवाल के समाजहित के अधूरे सपनों को साकार रूप देने में मंच अपना पूर्ण सहयोग देगा।

जोरहाट, ११ मई। श्री बाकलीवाल के निधन का समाचार पाते ही मारवाड़ी युवा मंच, जोरहाट के सदस्यों में शोक की लहर दौड़ पड़ी। शाखाध्यक्ष श्री अनिल केजड़ीवाल की अध्यक्षता में एक जरूरी बैठक आयोजित की गई जिसमें श्री बाकलीवाल के निधन को सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज की क्षति बताया गया जिसकी भरपाई करना नामुमकिन है। बैठक में कहा गया कि श्री बाकलीवाल में महत्वाकांक्षी योजनाएं थीं जिसे वे इलाज के बाद क्रियान्वित करना चाहते थे। उनके द्वारा कई सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में किया गया अतुलनीय एवं सराहनीय योगदान सदैव याद किया जाता रहेगा। समाज उनके निधन से हुई भारी क्षति को कभी भूला नहीं सकेगा।

मंच के सभी सदस्यों द्वारा दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं परिवार को इस आघात को सहने की शक्ति प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

टिटिलागढ़ : अमृतधारा योजना का लोकार्पण

युवामंच की टिटिलागढ़ शाखा द्वारा सरकारी चिकित्सालय परिसर में निर्मित शीतल जल प्याऊ 'अमृतधारा' का शुभ उद्‌घाटन सम्बलपुर के राज्यसभा सदस्य श्री सुरेन्द्र लाठ के कर-कमलों से किया गया। श्री लाठ ने इस जनसेवा को सुदृढ़ ग्रामीण अंचलों में संप्रसारित करने की अपील की। कार्यक्रम के सम्माननीय अतिथि थे प्रान्तीय अध्यक्ष श्री श्यामसुन्दर अग्रवाल, मुख्य वक्ता थे नगरपाल श्री सुभ्रान्सु दास। सभा का सभापतित्व करते हुए अध्यक्ष श्री रिंकु अग्रवाल ने शाखा की गतिविधियों एवं जनसेवा कार्यों का वर्णन किया। उन्होंने चौक स्थानों पर प्याऊ खोलने एवं शहर में एक अग्रसेन भवन के निर्माण की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम को अधिवक्ता श्रीराधेश्याम अग्रवाल केसिंगा मंच के सभापति श्री अनिल जैन, महेश्वर हिन्दी स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री भिखारी चरण मिश्र आदि ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम संचालन श्री ईश्वर चन्द्र जैन ने एवं धन्यवाद ज्ञापन युवा निर्मल चौधरी ने किया।

कांटाबाजी : पदाधिकारियों का दौरा

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सर्वश्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल, कार्यशाला के प्रान्तीय संयोजक राजेश अग्रवाल, प्रान्तीय कार्यकारिणी सदस्य नारायण अग्रवाल, स्थायी आमंत्रित सदस्य मुरारीलाल अग्रवाल लड्डुगांव शाखामंत्री मुकेश जैन ने धर्मगढ़, लड्डुगांव, जूनागढ़, भवानी पटना शाखाओं का दौरा किया जहां इन पदाधिकारियों ने संगठन व कार्यक्रमों, कार्यशाला की महत्ता एवं शाखा के प्रशासनिक कार्यों पर चर्चा की।

धर्मगढ़ शाखा में सत्र २००५-०६ के लिए चुनाव करवाकर श्री मुकेश अग्रवाल को अध्यक्ष एवं श्री विकास अग्रवाल को मंत्री का कार्यभार दिया गया।

लड्डुगांव शाखा में शाखाध्यक्ष श्री बजरंग लाल गोयल की अध्यक्षता में सभा का आयोजन किया गया। शाखा मंत्री श्री पूनमचंद गोयल ने शाखा के कार्यों की जानकारी दी। लड्डुगांव शाखा को एक आदर्श शाखा निरूपित किया गया।

जूनागढ़ शाखा के अध्यक्ष श्री मुकेश अग्रवाल व मंत्री श्री श्यामसुन्दर शर्मा से शाखा की सक्रीयता पर चर्चा हुई एवं आगे की जन हितैषी जारी रखने को कहा गया।

भवानीपटना शाखा में नव निर्वाचित शाखाध्यक्ष श्री योगेश जैन तथा प्रान्तीय कार्यसमिति के स्थायी आमंत्रित सदस्य श्री राजेश जैन से चर्चा हुई एवं शाखा की सक्रीयता हेतु उचित मार्गदर्शन दिया गया।

हरिशंकर रोड शाखा का सांगठनिक दौरा

प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति के स्थायी सदस्य सर्वश्री सुभाष अग्रवाल प्रान्तीय संयोजक राजेश अग्रवाल, निवर्तमान शाखा

अध्यक्ष आशीष अग्रवाल, मंत्री श्री मुकेश जैन ने हरिशंकर रोड शाखा का दौरा किए जाने पर निवर्तमान शाखाध्यक्ष श्री रोहतास अग्रवाल की अध्यक्षता में एक सभा की गई। शाखा मंत्री श्री दीपक अग्रवाल व सदस्यों ने शाखा के कार्यक्रमों की जानकारी दी। सत्र २००५-०६ हेतु चुनाव करवाकर श्री प्रवीण अग्रवाल को अध्यक्ष श्री आनंद अग्रवाल को मंत्री तथा श्री दुलीचन्द्र अग्रवाल को कोषाध्यक्ष का कार्यभार दिया गया।

अन्य संस्थाएं

कोलकाता : चतुर्दश सामूहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

१२ जून। अग्रवाल परिणय सूत्र समिति के तत्वावधान में चतुर्दश सामूहिक परिचय सम्मेलन समाजसेवी श्री भंवरलाल जाजोदिया की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें २०० प्रत्याशियों का परिचय कराया गया। इसमें काफी संख्या में युवतियां भी शामिल थीं। कार्यक्रम का उद्घाटन उद्योगपति व समाजसेवी संतोष सराफ ने किया। इस अवसर पर प्रधान वक्ता पत्रकार श्री गीतेश शर्मा ने कहा कि भारत फल-फूल वाला देश है। इसके बावजूद इस समाज के कुछ नवधनाढ्य लोग बाहर के देशों से फल और फूल मंगाते हैं। यह अपने देश की मिट्टी का अपमान है। हम दिखावे के नाम पर अपनी संस्कृति-सभ्यता से काफी दूर होते जा रहे हैं। जब हमारा चरित्र बिगड़ जाय तो संस्कारों की रक्षा संभव नहीं है। समाज के मध्यम व निम्न तबके को शिक्षित करने के लिए आगे आना होगा। हमें दिखावे, ढोंग, पाखंड आदि से ऊपर उठकर समाज के कल्याणार्थ सादगीपूर्ण जीवन जीना होगा। समाज के समर्थ लोग इस पर पहल करें तभी समाज सीख ले सकेगा। संस्था के सचिव विमल चौधरी ने कहा- समाज को भौतिकवादी संस्कृति, दलालों के बढ़ते वर्चस्व, दहेज की बढ़ती प्रवृत्ति आदि से बचाने का प्रयास करना होगा। अध्यक्षीय भाषण में श्री जाजोदिया ने कहा कि समाज की हरेक रचनात्मक गतिविधियों को मैं तन-मन-धन से सहयोग करता रहूंगा। संस्कार युक्त समाज ही हमारी पहचान है। इस अवसर पर उद्योगपति व समाजसेवी प्रमोद अग्रवाल, सतीशचन्द्र अग्रवाल, भीमसेन अग्रवाल, रामनिवास जिंदल आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

भोपाल : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का एक अभिनव बौद्धिक अनुष्ठान

म.प्र. राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, भोपाल द्वारा अभिनव बौद्धिक अनुष्ठान क्रम में 'राजनीति : अपराध और समाज' जैसे सामयिक ज्वलंत विषय पर दो दिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में देश के जाने माने समाज शास्त्री श्री असगर अली इंजीनीयर, प्रो. योगेश अटल, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त समाज वैज्ञानिक श्री अच्युतानंद मिश्र, महानिदेशक माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ न्यायमूर्ति श्री डी.एन. धर्माधिकारी, पूर्व निदेशक सी.बी.आई. श्री जोगिंदर सिंह, श्री हिमांशु जोशी, सुप्रसिद्ध कथाकार अंतिम दिन के प्रमुख अतिथि प्रदेश के राज्यपाल महामहिम डॉ. बलराम जाखड़ ने भाग लिया। आधार वक्तव्य, व्याख्यान माला की संयोजिका डॉ. आशा शुक्ला ने दिया।

समाज में साधारण से लेकर जघन्य अपराधों की निरंतर बढ़ती जा रही संख्या पर चिंता व्यक्त की गई। सरकार की असमर्थता, अपराधियों के राजनैतिक संरक्षण, राजनीति का वर्तमान विकृत स्वरूप एवं सब कुछ शासन पर छोड़ जनमानस द्वारा भी नारे - पथराव - तोड़फोड़-धरना - रास्ता रोको आंदोलनों से विरोध प्रदर्शित करना प्रवृत्ति, कानूनों की भरमार होते हुए भी उनका पालन न करा पाना, एक दूसरे पर दोषारोपण आदि कारणों से गुत्थी दोनों दिन उलझती ही जा रही है। स्थिति इतनी भयंकर हो गई है कि समस्याओं का हल निकल ही नहीं पा रहा है। समूचे विश्व में मानव कल्याण व आध्यात्मिक उत्थान की प्रेरणा देता धर्म के मूल को भी आडम्बरों और साम्प्रदायिकता के चोले में सीमित कर देना आदि कुछ मुद्दे को वर्तमान परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार बताते हुए सभी विद्वान वक्ताओं ने अपने-अपने सारगर्भित विचार रखे। उनका कहना था अब तो पुन: धर्म संस्थापन हेतु अवतार रूप में कोई महापुरुष इस धरती पर उतरे वह ही इससे मुक्ति दिला सकेगा।

डॉ. आशा शुक्ला द्वारा रचित ''ताकि... संवाद जारी रहे'' मंथन-२ पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

बधाई / सम्मान

रानीगंज : राखी टॉप टेन में

रानीगंज के निवासी अशोक अग्रवाल की पुत्री राखी अग्रवाल ने पश्चिम बंगाल ज्वाइंट इंट्रेंस की रीक्षा में मेडिकल के टॉप टेन में चौथा स्थान प्राप्त कर रानीगंज सहित शिल्पांचल का नाम रोशन किया है. हिन्दीभाषी समाज ने राखी अग्रवाल को बधाई दी है। शिल्पांचल की हिन्दीभाषी छात्राएं राखी के इस सफलता से काफी खुश है। राखी आगे की पढ़ाई और अधिक मेहनत से करना चाहती है ताकि आगे जाकर वह शिल्पांचल सहित पूरे राज्य का नाम रोशन करे।

सम्मेलन की ओर से सुश्री राखी को बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

कानपुर : श्रीश्रीगोपाल तुलस्यान लायन्स के मण्डलाधीश मनोनीत

कानपुर शाखा के संस्थापक महामंत्री एवं निवर्तमान अध्यक्ष श्री श्री गोपाल तुलस्यान लायन्स क्लब इन्टरनेशनल के मण्डल ३२१ बी-२ के वर्ष २००५-२००६ के लिए मण्डलाधीश चुने गये। विगत दो दशकों से आप लायन्स क्लब के अतिरिक्त अनेक सामाजिक, व्यापारिक एवं धार्मिक संस्थाओं के उच्च पदों पर सुशोभित होकर कार्यो को गति प्रदान करते रहे हैं। कानपुर शाखा आपकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देती है।

श्री बैजनाथ पँवार ८१ वर्षीय बहुआयामी व्यक्तित्व

साहित्य सृजन एवं विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े हुए तथा लगभग ५० वर्षों से प्रौढ़ शिक्षा का प्रचार प्रसार, स्कूलों हेतु भवन का निर्माण, वृक्षारोपण, राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलवाने आदि अनेकों सामाजिक कार्यों में संलग्न श्री पंवार के अकल बिना ऊंट उभाणीं, लाडेसर, नैणां खुट्यों नीर, ओलखाण, नींव के पत्थर, रतन नगर का संक्षिप्त इतिहास आदि प्रकाशित ग्रंथ हैं। मरूवाणी, ओलमो, जागती जोत, दीपक, बिणजारो, माणक, समाज विकास आदि पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं अक्सर प्रकाशित होती रहती हैं।

श्री पँवार को राजस्थानी भारती दिल्ली द्वारा श्री विष्णु हरि डालमिया पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा पृथ्वीराज स्मृति पुरस्कार, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर द्वारा साहित्य सम्मान-पत्र, राजस्थानी विकास मंच, जालौर द्वारा डी. लिट्ट मानद उपाधि आदि कई सम्मानों से नवाजा गया है।

श्री बैजनाथ पँवार को सम्मेलन की ओर से बधाई।

शोक सभा / श्रद्धांजलि

श्री नरसिंह लाल गुप्ता हमारे बीच नहीं रहे

२४ जून २००५। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति के वरिष्ठ एवं आजीवन सदस्य राजहंस अपार्टमेंट, अलीपुर निवासी श्री नरसिंह लाल गुप्ता का बैकुण्ठवास हो गया। सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने शोक प्रकट करते हुए कहा कि स्व. नरसिंह लाल जी एक कर्मठ कार्यकर्त्ता, विशिष्ट समाज सेवी एवं शिक्षा प्रेमी थे। मृदुभाषी एवं मिलनसार प्रवृत्ति के होने के कारण वे सबके प्रिय थे। सम्मेलन के प्रति उनका लगाव प्रशंसनीय था। उनके निधन से समाज की भारी क्षति हुई है।

परम पिता परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं उनके शोक संतप्त परिवार को इस दारूण दुःख को झेलने की शक्ति देवें।

श्री पुरुषोत्तमदास चितलांगिया का देहावसान

१७ जून। सफल उद्योगपति एवं नेता स्व. पुरुषोत्तमदास चितलांगिया के निधन पर अखिल भारतीय वन बंधु परिषद द्वारा एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। स्व. चितलांगिया के सामाजिक अवदानों को याद करते हुए परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामेश्वरलाल काबरा ने कहा कि स्व. चितलांगिया का जीवन मनीषियों जैसा था। वे जिस संस्था से जुड़ते थे उसके प्रति समर्पित हो जाते थे। उन्होंने उनके सपनों को साकार करने की आवश्यकता बताई।

शोक सभा की अध्यक्षता कर रहे श्री इन्द्र चन्द्र संचेती ने कहा कि स्व. पुरुषोत्तम दास चितलांगिया समाज के लिए पथ प्रदर्शक थे। उनके स्वर्गवास से समाज को बड़ी हानि हुई है। सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुदर्शन कुमार बिड़ला ने कहा कि स्व. चितलांगिया एक कर्त्तव्यनिष्ठ समर्पित एवं मददगार इंसान थे। मदद के लिए वह अगली पंक्ति में खड़े होने वालों में से एक थे। श्रद्धांजलि सभा में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। सभा का संचालन श्री मुकुन्द राठी ने किया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन स्व. चितलांगिया के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता है एवं दिवंगत आत्मा की शान्ति व उनके परिवार को साहस सम्बल प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता है।

श्री किशनलाल महिपाल का स्वर्गारोहण

१७ जून। सुविख्यात समाजसेवी तथा उद्योगपति श्री किशनलाल महिपाल का एक लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। वे ७४ वर्ष के थे।

स्व. महिपाल अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्यों में से एक थे एवं सम्मेलन के प्रति इनका लगाव प्रशंसनीय था।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन स्व. कन्हैयालाल जी महिपाल के निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है एवं ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति दे एवं उनके शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को झेलने की शक्ति दें।

रात दस बजे

प्रकाश चन्द्र अग्रवाल

संस्कार!

एक राजा के यहां बड़ी सुन्दर और सुशील घोड़ी थी। कई बार युद्ध में इस घोड़ी ने राजा के प्राण बचाए थे। कुछ दिन बाद घोड़ी को एक बच्चा पैदा हुआ, परन्तु बच्चा काना था। एक दिन बच्चे ने अपनी माँ से पूछा कि मेरा सारा शरीर तो सुडौल है, परन्तु मेरी एक आंख क्यों नहीं है, मुझे बड़ी लज्जा आती है। घोड़ी ने कहा कि बेटा एक दिन राजा मुझ पर सवार होकर टहलने जा रहे थे और तू गर्भ में था। राजा ने मेरी कोख पर एक हंटर मार दिया, जिसका असर गर्भ पर पहुंचा तू काना जन्मा।

यह बात माता के मुख से सुनकर बच्चे ने कहा कि माता मैं राजा से इसका बदला लूंगा। कभी युद्ध में राजा को शत्रु के हाथ फंसा कर मरवा दूंगा। घोड़ी अपने पुत्र की यह बात सुन घृणा से कहने लगी कि बेटा तू बड़ा कृतघ्नी है। मेरी कोख को कलंकित करना चाहता है। जिस राजा ने हमें पाला-पोषा, भांति-भांति के चारा-दाना खिलाया, उसे एक बार क्रोध आ गया और उससे कुछ हमारा नुकसान हो गया तो क्या उसकी जान के ग्राहक बने। घोड़ी ने इसी भांति नाना प्रकार से बच्चे को समझाया, परन्तु वह राजा को कष्ट पहुंचाने की जिद पर डटा रहा। जब वह बच्चा घोड़ा हुआ और राजा की सवारी में आया तब वह मन ही मन बदले की प्रतीक्षा करता रहा। एक समय राजा उसी घोड़े पर चढ़ युद्ध को चले तब घोड़ा बदले का समय आया जान बहुत प्रसन्न हुआ। मन ही मन सोचता जाता था कि आज राजा को युद्ध में फंसाकर आंख का बदला लूंगा। जब राजा युद्ध में पहुंचा और शत्रु से भिड़ गया तो घोड़े ने बड़ी वीरता दिखाई, राजा शत्रु के प्रहार से मूर्छित हो गिरने को ही था कि घोड़ा राजा को ले भागा। राजमहल पहुंचने पर घोड़ी ने पूछा- बेटा कहो युद्ध कैसा रहा। घोड़े ने युद्ध की सब कथा सुनाई। माता ने कहा- क्या तूने राजा से अपना बदला लिया। घोड़े ने कहा- माता मैं बदला कैसे लेता मुझे तो उस समय यश की चाह से केवल शत्रु को परास्त करने की सूझता था। माता ने कहा- बेटा तुमसे नहीं कर सकते। क्योंकि तू नस्ल में अच्छा और फिर तेरी माँ भी तो नमक हलाल है। जिनकी माताएं उत्तम संस्कार डालती हैं वे संतानें कभी पाप नहीं कर सकतीं। यदि क्रोधवश कभी पाप का इरादा भी करें, तब भी अपयश के भय से वे पापाचरण में लज्जा करेंगे।

माता और पिता दोनों संतान के जन्मदाता हैं। किन्तु संतान में अच्छे संस्कार डालने का काम माता जितने कारगर ढंग से करती हैं, पिता उतना नहीं कर सकता। पश्चिमी सभ्यता, भौतिकवाद की बुराइयां आज जीवन में घर करती जा रही हैं। ऐसे समय में आज की माताओं को इस कहानी से सीख लेनी चाहिए। उन्हें अपने बच्चों में अच्छे संस्कार डालना चाहिये। बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो। वे बड़े होकर देश और समाज को आगे बढ़ाने का काम कर सकें, इसके लिए उपर्युक्त कहानी से शिक्षा ग्रहण कर अपने बच्चों का भविष्य बनाने का कार्यक्रम निर्धारित करना चाहिए।

REGISTERED Postal Registration No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06 SAMAJ VIKAS - JUNE 2005 RNI Regd. No. 2868/68

Leaders
in construction equipment
and infrastructure financing

SREI
Srei Infrastructure Finance Limited
'Vishwakarma' 86C, Topsia Road (South), Kolkata-700 046, Tel : +91 33 2285 0112-5/0124-7, Fax : +91 33 22857542/8501,
corporate@srei.com, www.srei.com

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,